अर्पणा पुष्पांजलि

अगस्त 2026

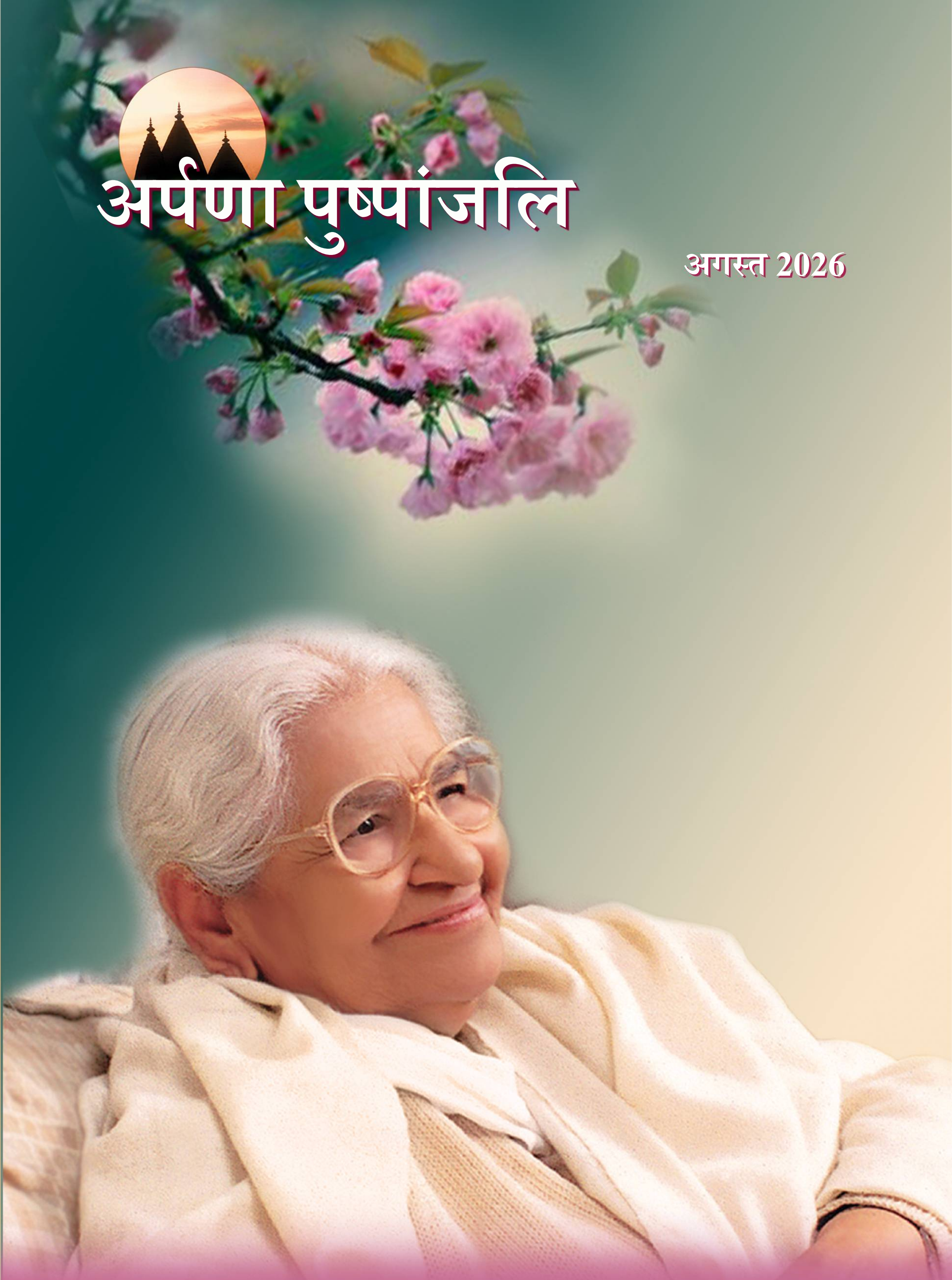

मन चाहे फूलों की जा, मैं ख़ुद ही जाये चढ़ूँ।
इक इक अंग तेरा छू कर प्रभु जी, राममय मैं बनूँ।।

परम पूज्य माँ

कलियाँ बीन बीन राम मेरे,
तोरे मंदिर में चढ़ाती हूँ।
हर कली से राम राम,
तेरा नाम ही लिखती जाती हूँ।।
कोई नयन में भर करी,
तोरे चरण में धर आती हूँ।
कोई हृदय में धर करी,
तोरी शय्या ही बनाती हूँ।।
परम पूज्य माँ

भक्त हृदय के उद्गार..

अब और मैं कुछ भी न जानूँ,
बस इतना कहती जाऊँगी।
नमस्कार स्वीकार करो,
बस यह ही कहती जाऊँगी।।

जग तृष्णा मिटा दे पिया,
यह ही मुझे भरमाये पिया।
ऐसी करनी कर दे पिया,
यह जग यूँ न भरमाये पिया।।

धूल बना लो पिया चरणन् की,
या फूल बना लो चरणन् की।
जो भी करो राखो शरण में,
मुझे प्यास लगी तव चरणन् की।।

मन को कछु न भाये पिया,
तोरे चरण की याद आये पिया।
तड़प उठे तव मिलन को,
और तुझको ही बुलाये पिया।।

- परम पूज्य माँ
प्रार्थना शास्त्र 1, न. 267
4.1.1960

अनुक्रमणिका

1 भक्त हृदय के उद्‌गार
अब और मैं कुछ भी न जानूँ...

3 भक्ति योग
एक साधक

5 अनुग्रह, करुणा और दिव्य प्रेम की अनुपम जीवन-गाथा
डॉ. एला आनंद की अमर विरासत को श्रद्धापूर्ण नमन

8 सेवा का सबसे महत्त्वपूर्ण आयाम
आभा भंडारी

9 जब दिल बोल उठे...
दिल्ली की प्रार्थना सभा में श्रद्धांजलि

17 *ज्ञान की गंगा उसकी है, इसको तुम अब जान लो...*
अर्पणा प्रकाशन - 'गंगा श्रद्धा प्राणप्रद'

21 देने का आनंद
श्री आलोक चोपड़ा

24 सत् चित्त आनन्द
परम पूज्य माँ से पिताजी के प्रश्नोत्तर

28 जिसका ज्ञान आवृत हो गया हो, उसे भगवान ने ज्ञानी क्यों कहा?
अर्पणा प्रकाशन - श्रीमद्भगवद्गीता - 3/38-39

31 हमने कहाँ बुलाया है आपको,
आप ही ने आवाज़ देई बुला लिया
श्रीमती पम्मी महता

33 अपर ब्रह्म सों उठ कर, परब्रह्म जब जान ले
मुण्डकोपनिषद्, तृतीय मुण्डक - 1/3

37 अर्पणा समाचार पत्र

सम्पादक की ओर से

गद्य में प्रस्तुत सभी लेख साधकों के प्रश्नों के उत्तर में परम पूज्य माँ द्वारा प्राप्त सत्संगों पर आधारित हैं और संकलन-कर्ता की निजी समझ के अनुकूल हैं। काव्य की पंक्तियाँ पूज्य माँ के मुखारविन्द से प्रवाहित दिव्य प्रवाह का अंश हैं; जिसे सुश्री छोटे माँ ने लेखनीबद्ध किया है। अपनी पूर्ण सामर्थ्य के अनुसार उसे ज्यों का त्यों प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुति में किसी भूल के लिये हम क्षमा प्रार्थी हैं।

सम्पादक : *पूर्णिमा दत्त*
सह सम्पादक : *श्रीमती साधना पाल*

पता : अर्पणा आश्रम, मधुबन, करनाल,
132 037, हरियाणा भारत

भक्ति योग

एक साधक

अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करुण एव च।
निर्ममो निरहङ्कारः समदुःखसुखः क्षमी॥

सन्तुष्टः सततं योगी यतात्मा दृढनिश्चयः।
मय्यर्पितमनोबुद्धिर्यो मद्भक्तः स मे प्रियः॥

श्रीमद्भगवद्गीता – 12/13-14

जो किसी से द्वेष न करे

किसी के प्रति मन में घृणा या कटुता न रखना। सबको ईश्वर का अंश समझना। यदि कोई गलत भी करे, तो भीतर द्वेष न पालना।

सबके प्रति मैत्री भाव रखे

सबसे प्रेम, अपनापन और मधुरता से व्यवहार करना। ऐसा स्वभाव हो कि लोग आपके पास आकर शांति अनुभव करें।

सबके प्रति करुणा रखे

दूसरों के दुःख को समझना और सहायता के लिए तत्पर रहना। कठोर नहीं, दयालु बनना।

ममता और अहंकार से रहित हो

“यह मेरा है” - यह भावना कम होती जाए। और “मैं ही सब कर रहा हूँ” - यह अहंकार भी मिटे। सब कुछ माँ और भगवान का है - ऐसा भाव रखना।

सुख-दुःख में समान रहे

अच्छे समय में बहुत उछलना नहीं, और दुःख में टूट जाना नहीं। दोनों को भगवान की इच्छा मानकर शांत रहना।

क्षमावान हो

दूसरों की भूलों को क्षमा करना सीखना। मन में बदला या क्रोध जमा न करना।

सदैव संतुष्ट रहे

जो मिला है उसमें प्रसन्न रहना। बार-बार शिकायत न करना। भीतर कृतज्ञता रखना।

दृढ़ निश्चयी और योग में स्थित हो

साधना में नियमित रहना। मन बदलने पर भी मार्ग न छोड़ना। हर समय भीतर से भगवान से जुड़ने का प्रयास करना।

मन और बुद्धि भगवान को अर्पित कर दे

अपने विचार, निर्णय और जीवन भगवान को समर्पित करना। अपने अहंकार से नहीं, दिव्य मार्गदर्शन और आदेश से चलना।

ऐसा भक्त भगवान को प्रिय होता है

जिसके भीतर ये गुण आने लगते हैं, वह भगवान और सद्गुरु को बहुत प्रिय हो जाता है।

सम्पूर्ण संदेश

सच्चा साधक वह है:

- जो सबको प्रेम करे,

- किसी से द्वेष न रखे,

- विनम्र रहे,

- क्षमा करे,

- संतोष में रहे,

- और अपना जीवन भगवान तथा गुरु चरणों में समर्पित कर दे।

ऐसा हृदय ही धीरे-धीरे भगवान की कृपा का पात्र बनता है।❖

अनुग्रह, करुणा और दिव्य प्रेम की अनुपम जीवन-गाथा

डॉ. एला आनंद की अमर विरासत को श्रद्धापूर्ण नमन

- अर्पणा परिवार के एक सदस्य द्वारा

हाल ही में अर्पणा परिवार उस दिव्य व्यक्तित्व को स्मरण करने के लिए एकत्रित हुआ, जिसका सम्पूर्ण जीवन मानवता के लिए वरदान के समान था।

चिकित्सा-जगत उन्हें डॉ. एला आनंद के नाम से जानता था— एक दूरदर्शी स्त्री-रोग विशेषज्ञ, यूनाइटेड किंगडम के रॉयल कॉलेज ऑफ ऑब्स्टेट्रिशियन्स एंड गायनेकोलॉजिस्ट्स (FRCOG) की फेलो तथा अर्पणा अस्पताल की सम्मानित चिकित्सा निदेशक, जिन्होंने तीन दशकों से भी अधिक समय तक स्त्री एवं प्रसूति रोग विभाग का कुशल नेतृत्व किया।

किन्तु जिन लोगों ने उनके स्नेह, आत्मीयता और वात्सल्य का अनुभव किया, उनके लिए वह केवल 'एला आंटी' थीं - अपनी, अत्यन्त अपनी।

दिव्य प्रेरणा का स्वर्णिम सूत्र

यदि हम एला आंटी के जीवन रूपी सुंदर ताने-बाने को ध्यान से देखें, तो उसमें एक स्वर्णिम सूत्र निरंतर गुंथा हुआ दिखाई देता है - परम पूज्य माँ की दिव्य प्रेरणा, स्नेहमयी मार्गदर्शन, संरक्षण और सतत प्रोत्साहन।

परम पूज्य माँ के असंख्य सत्संगों में प्रतिपादित निःस्वार्थ सेवा का संदेश तथा उनके जीवन का उज्ज्वल आदर्श ही वह प्रेरणा थी, जिसने एला आंटी की चिकित्सकीय प्रतिभा को एक आध्यात्मिक साधना और मानव-सेवा के पावन उद्देश्य में रूपांतरित कर दिया।

माँ की कृपा से पुष्पित एक समर्पित जीवन

परम पूज्य माँ की असीम कृपा से एला आंटी ने शहर का सुविधासंपन्न चिकित्सा-जीवन त्याग कर, अपने अद्वितीय ज्ञान तथा चिकित्सकीय दक्षता को ग्रामीण एवं उपेक्षित जनसमुदाय की सेवा के लिए पूर्णतः समर्पित कर दिया।

उनकी आध्यात्मिक साधना अत्यन्त गहन थी। परम पूज्य माँ के प्रकाश में उन्होंने श्रीमद्भगवद्गीता, उपनिषदों तथा अन्य ग्रंथों के गंभीर अध्ययन के साथ साथ उनका अंग्रेज़ी में अनुवाद भी किया, जो आज भी अर्पणा के अभिलेखागार में अमूल्य धरोहर के रूप में सुरक्षित हैं।

अस्पताल की विशाल और चुनौतीपूर्ण जिम्मेदारियों के बीच भी उन्होंने कभी अपने आध्यात्मिक पथ को बाधित नहीं होने दिया। माँ द्वारा आलोकित उस मार्ग पर वे सदैव आनंद, श्रद्धा और समर्पण के साथ अग्रसर रहीं।

उनका हृदय संगीत-रस से भी परिपूर्ण था। अवसर मिलने पर वे अपने मधुर पश्चिमी शास्त्रीय संगीत से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देती थीं।

ग्रामीण स्वास्थ्य सेवा की अग्रदूत

ग्रामीण स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में एला आंटी एक सच्ची पथप्रदर्शक थीं। यूनिसेफ के सहयोग से उन्होंने करनाल जनपद के अनेक गाँवों में व्यापक बाल-टीकाकरण अभियान का सफल नेतृत्व किया। इस अभियान ने शिशु मृत्यु-दर में उल्लेखनीय कमी लाकर असंख्य परिवारों के जीवन में आशा का संचार किया।

वह जानती थीं कि नवजात शिशुओं के जीवन की रक्षा तभी संभव है, जब गाँवों के स्तर पर कार्य करने वाली पारंपरिक प्रसूति सेविकाएँ भी सशक्त और प्रशिक्षित हों।

इसी उद्देश्य से उन्होंने हरियाणा और हिमाचल प्रदेश के ग्रामीण अंचलों की पारंपरिक दाइयों के साथ अत्यंत धैर्य, स्नेह और आत्मीयता से कार्य किया। उन्हें असुरक्षित प्रसव-पद्धतियों का परित्याग करने के लिए प्रेरित किया तथा यूनिसेफ द्वारा उपलब्ध कराए गए स्वच्छ एवं सुरक्षित प्रसव-किटों के उपयोग का प्रशिक्षण दिया।

निःस्वार्थ सेवा का विश्वव्यापी सम्मान

एला आंटी की निःस्वार्थ सेवा, समर्पण और उत्कृष्ट कार्यशैली ने उनके सम्पूर्ण सहयोगी दल को भी उसी भावना से अनुप्राणित कर दिया। परिणामस्वरूप अर्पणा की सामूहिक सेवाओं को विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) द्वारा प्रदान किए जाने वाले प्रतिष्ठित 'सासाकावा हेल्थ प्राइज़' से सम्मानित किया गया।

यह अर्पणा परिवार के लिए अत्यंत गौरव और हर्ष का क्षण था, जब जिनेवा में आयोजित विश्व स्वास्थ्य सभा (World Health Assembly) में एला आंटी ने अत्यन्त गरिमा, विनम्रता और आत्मविश्वास के साथ अर्पणा का प्रतिनिधित्व किया। उनकी सादगी और व्यक्तित्व ने वहाँ उपस्थित सभी लोगों के हृदयों पर अमिट छाप छोड़ी।

हर परिस्थिति में संयम

सासाकावा पुरस्कार - लगभग पंद्रह इंच लंबी श्वेत क्रिस्टल की सुंदर ट्रॉफी - हवाई अड्डे की सुरक्षा-जाँच के दौरान संदेह का कारण बन गई। एक्स-रे मशीन में वह किसी छिपे हुए हथियार जैसी दिखाई दी और सुरक्षा अधिकारियों का ध्यान तुरंत उसकी ओर गया।

स्थिति और तनावपूर्ण हो गई जब एला आंटी स्वयं सुरक्षा-जाँच के लिए आगे बढ़ीं। हैंड-स्कैनर लगातार तीव्र ध्वनि करने लगा। सुरक्षा अधिकारियों ने गंभीर हो कर उन्हें विस्तृत जाँच के लिए चलने को कहा।

किन्तु जहाँ कोई दूसरा व्यक्ति घबरा जाता, वहाँ एला आंटी के चेहरे पर एक सहज मुस्कान खिल उठी। उन्हें तुरंत याद आया कि उन्होंने उस दिन भारी ज़री (ब्रोकेड) की साड़ी पहन रखी थी, जो बार-बार सुरक्षा यंत्र को सक्रिय कर रही थी। जब वास्तविक कारण स्पष्ट हुआ, तो सुरक्षा अधिकारी भी मुस्कुरा उठे और सभी को शुभकामनाओं के साथ आगे जाने दिया।

पूरी घटना के दौरान एला आंटी पूर्णतः शांत रहीं, मानो उस क्षण का आनंद ले रही थीं।

चाहे अस्पताल का संचालन हो, विश्व मंच पर अर्पणा का प्रतिनिधित्व करना हो, गाँवों की दाइयों को प्रशिक्षित करना हो अथवा किसी हवाई अड्डे पर अनजाने में 'हथियार छिपाने' के संदेह का सामना करना हो - उन्होंने जीवन की हर परिस्थिति का सामना सहजता, विनम्रता और मुस्कान के साथ किया।

अमर ज्योति

एला आंटी की स्नेहिल मुस्कान, उनका गहन ज्ञान और उनका आत्मीय व्यवहार, हमें सदैव स्मरण रहेगा। जो जीवन प्रेम, सेवा और ईश्वर-समर्पण के प्रकाश से आलोकित होता है, उसका कभी अंत नहीं होता। ऐसा जीवन अपने कर्मों, अपने आदर्शों और अपने स्पर्श से अनगिनत हृदयों में सदैव जीवित रहता है।

एला आंटी की विरासत आज भी अर्पणा की प्रत्येक धड़कन में जीवित है - उस संस्थान में, जिसे उन्होंने अपने श्रम, समर्पण और दूरदृष्टि से सशक्त बनाया; उन असंख्य जीवनों में, जिन्हें उन्होंने नई आशा और जीवनदान दिया; उन चिकित्सकों में, जिन्हें उन्होंने सेवा का वास्तविक अर्थ सिखाया; और सबसे बढ़कर, परम पूज्य माँ के उस दिव्य प्रेम में, जिसे उन्होंने अपने जीवन में आत्मसात किया और सहज ही सबके बीच बाँटती रहीं।

सेवा का सबसे महत्त्वपूर्ण आयाम

आभा भंडारी

हमारी परम प्रिय डॉ. एला आनंद इस नश्वर संसार से अनन्त की यात्रा पर प्रस्थान कर दिव्य सत्ता में लीन हो गई हैं। उन्होंने अपने जीवन के प्रत्येक श्वास से प्रभु के श्रीचरणों में प्रेम, भक्ति और स्तुति का अर्पण किया।

एक चिकित्सक के रूप में उन्होंने निःस्वार्थ भाव से विशेषकर उन लोगों की सेवा की जिन्हें इसकी सबसे अधिक आवश्यकता थी - हरियाणा के गाँवों में रहने वाले निर्धन और वंचित परिवारों की। अपने पति, डॉ. ए. के. आनंद, के साथ मिलकर उन्होंने अर्पणा हॉस्पिटल को प्रेम, समर्पण और सेवा का केन्द्र बनाया तथा अपना सम्पूर्ण जीवन परम पूज्य माँ के श्रीचरणों में समर्पित कर दिया।

परम पूज्य माँ के प्रति उनकी सेवा का सबसे महत्त्वपूर्ण आयाम था 'उर्वशी' के प्रति उनका अगाध प्रेम। परम पूज्य माँ से पाँच दशकों से भी अधिक समय तक प्रवाहित होने वाले इस निर्मल और परम ज्ञान को उन्होंने श्रद्धापूर्वक पढ़ा, उसका अनुवाद किया, उस पर आधारित अनेक हृदयस्पर्शी रचनाएँ तैयार कीं और उन्हें मधुर स्वर में गाकर अपनी विशेष भेंट के रूप में अर्पित किया।

वह सदैव अपने पति डॉ. ए. के. आनंद के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी रहीं। डॉ. आनंद ने अपनी आत्मस्पर्शी वाणी में 'उर्वशी' की अनेक अमूल्य रचनाओं का संगीतबद्ध गायन किया और एला आंटी तबले पर उनका साथ देती रहीं। दोनों का यह संबंध प्रेम, समर्पण और सेवा का अद्वितीय उदाहरण था, जो जीवन के अनेक क्षेत्रों में निरन्तर प्रकट होता रहा।

आज हमारे हृदय उनकी असंख्य उपलब्धियों और मधुर स्मृतियों से और भी समृद्ध हो उठे हैं। उनका स्नेह, उनकी सेवा और उनका व्यक्तित्व सदैव हमारी अंतरात्मा में जीवित रहेगा।

प्रिय एला आंटी, आज जब आप अपनी आध्यात्मिक यात्रा को आगे बढ़ाते हुए दिव्य प्रभु के श्रीचरणों की ओर अग्रसर हैं, तब हम अपनी ओर से आपको श्रद्धापूर्ण नमन, हार्दिक प्रार्थनाएँ और कृतज्ञता अर्पित करते हैं। ऐसा प्रतीत होता है मानो आपकी पावन आत्मा दिव्य परमात्मा से अपने अगले पावन मिलन की ओर प्रकाशमय उड़ान भर रही हो।

जब दिल बोल उठे... *दिल्ली की प्रार्थना सभा में श्रद्धांजलि*

मैंने लगभग 70 वर्ष पहले इस (मॉडर्न) स्कूल में पढ़ाई की थी और डॉ. एला, जिन्हें उन दिनों एला सेन के नाम से जाना जाता था, मुझसे दो वर्ष आगे थीं। एला नृत्य और गायन में बहुत सक्रिय थीं... मैं कल्पना कर सकता हूँ उन्हें इसी मंच पर नृत्य करते हुए...

जब हमारी बेटी वेदिका का विवाह एला के बेटे वरुण से हुआ और दोनों परिवार और भी निकट हो गए, तो हमें बहुत खुशी हुई। मैं 2022 में अपनी बेटी और दामाद से मिलने इंग्लैंड गया था और उस समय एला भी उनके साथ रह रही थीं। तब उनकी उम्र शायद 83 वर्ष रही होगी। उनकी ऊर्जा देखकर मैं आश्चर्यचकित था। वह बिना थके लंबी दूरी तक पैदल चलती थीं - एक दिन में 3 मील, 5 मील तक - और पारिवारिक पिकनिक तथा मनोरंजक गतिविधियों में शामिल होने के लिए भी बहुत उत्साहित रहती थीं।

समय समय पर हमारी मुलाकात होती रही और उनके चेहरे पर हमेशा एक बहुत आत्मीय मुस्कान रहती थी... पुराने मित्रों से मिलना कितना सुकून देता है! हम तुम्हें हमेशा याद करेंगे, एलू, और तुम्हारी स्मृतियाँ हमारे साथ सदैव रहेंगी। उन सभी उपलब्धियों के लिए, जिन्होंने हजारों लोगों के स्वास्थ्य और जीवन को बेहतर बनाया, तुम्हें बारम्बार बधाई!

~ अशोक भोजवानी

एला ताईजी बहुत ही शालीन थीं और स्वयं को बहुत सहजता, संतुलन और गरिमा के साथ प्रस्तुत करती थीं। सीता सेन मेमोरियल अस्पताल, दिल्ली, में उनका जीवन बिल्कुल अलग था – जहाँ वह पियानो बजातीं और बच्चों के सो जाने के बाद, ड्रॉइंग रूम में ताऊजी के साथ वाल्ट्ज नृत्य करती... मगर कुछ वर्षों बाद जब हमने उन्हें मधुबन आश्रम में देखा, तो हमें महसूस हुआ कि वह वहाँ के जीवन का भी उतना ही अभिन्न हिस्सा थीं। वह मानो पानी की तरह थीं – जहाँ भी जाती, वहीं सहज रूप में ढल जातीं।

आजकल मैं *Divine Sight* पर एक पुस्तक लिख रही हूँ। *Divine Sight* अर्थात ऐसी दिव्य दृष्टि, जिसमें सभी प्राणियों और सभी वस्तुओं को बिना किसी भेदभाव या विभाजन के देखा जाये... और मुझे लगता है कि एला ताईजी ऐसी ही थीं! लेकिन वह उससे भी एक कदम आगे थीं, क्योंकि उन्होंने उस दृष्टि को *Divine Service* - दिव्य सेवा - में बदल दिया था। यही उनकी सबसे बड़ी शक्ति थी।

अपने इतने कोमल, विनम्र और सहज स्वभाव के बावजूद, एला ताईजी मेरी नज़र में एक बहुत ही सशक्त और प्रभावशाली महिला थीं।

~ रश्मि आनंद

मम्मी ने अपना बल, संतुलन और करुणा भाव अपनी गहरी आध्यात्मिक आस्था और मानवीय मूल्यों से अर्जित किया। उनके इन मूल्यों को आकार दिया उनके माता-पिता से मिले संस्कारों और परम पूज्य माँ की शिक्षाओं ने।

स्त्री रोग विशेषज्ञ के रूप में उनका जीवन अत्यंत व्यस्त और चुनौतीपूर्ण था - आधी रात के प्रसव, आपातकालीन स्थितियाँ और जटिलताएँ उनके दैनिक जीवन का हिस्सा थीं... फिर भी वह अपनी आंतरिक आध्यात्मिक यात्रा के प्रति गहराई से समर्पित रहीं।

हमारे परिवार के लिए वह एक आधार थीं। उन्होंने हमें जोड़ा, संभाला और हर परिस्थिति में मार्गदर्शन दिया। वह बिना भेद भाव के हमारी बात सुनतीं, बिना थोपे सलाह देतीं, विश्वास बनाए रखतीं, मतभेदों को सहजता से दूर करती और हममें से हर एक को प्रेम का अनुभव करातीं।

हम प्रभु के प्रति कृतज्ञ हैं कि उन्होंने हमें उनका जीवन एक आदर्श के रूप में दिया। हम प्रार्थना करते हैं कि हमें उनकी विरासत को आगे बढ़ाने की शक्ति और दृढ़ विश्वास प्राप्त हो - ऐसा जीवन जीने की शक्ति, जैसा उन्होंने जिया: उद्देश्यपूर्ण, विनम्र, साहसी और प्रेम से परिपूर्ण।

~ वरुण

दुनिया के लिए वह डॉ. एला आनंद थीं - एक मार्गदर्शक, चिकित्सक, प्रशासक और सबसे बढ़कर, एक मानवतावादी। हाँ, वह यह सब थीं, लेकिन इससे कहीं अधिक थीं। वे मेरी *सुपरवुमन* थीं। मुझे हमेशा इस बात पर गर्व रहा है कि मैं डॉ. एला आनंद की पोती हूँ और यह गर्व हमेशा मेरे भीतर जीवित रहेगा।

वह एक बहुत विराट व्यक्तित्व थीं, लेकिन उन्होंने उसे इतनी सहजता से अपने भीतर धारण किया था कि आपको इसका एहसास ही नहीं होता था। यही उनकी विशेषता थी।

वह अतयन्त आध्यात्मिक थीं मगर उन्होंने अपनी आध्यात्मिकता को न तो कर्मकांडों में और न ही शब्दों में व्यक्त किया, व्यक्त किया तो केवल अपने कर्मों के माध्यम से - और हर उस व्यक्ति के लिए जिसे उनकी आवश्यकता होती थी। उन्हीं में मैंने देखा कि वास्तविक करुणा कैसी होती है। उन्हीं ने हमारे भीतर यह विचार सींचा कि हमारा जीवन किसी न किसी रूप में दूसरों की सेवा में समर्पित होना चाहिए।

संगीत, नृत्य, किताबों और विज्ञान के प्रति मेरा प्रेम उन्हीं से आया। हम बच्चों ने जो भी किया - हर शरारत, हर दुस्साहस - वह उसमें हमारे साथ उसी भाव से शामिल होती थीं, मानो वह सब उन्हीं का योजन हो।

वह किसी के बारे में कोई पूर्वाग्रह नहीं रखती थीं। वह बिना अपनी ओर ध्यान आकर्षित किए, स्वयं को हर किसी के लिए समर्पित कर देती थीं। उन्होंने ही हमें सिखाया कि दयालुता को अपने अस्तित्व की घोषणा करने की आवश्यकता नहीं होती, न ही कृपा को मुखर होने की आवश्यकता होती है।

मैं स्वयं को वैसा ही बनाने का प्रयास करूँगी, जैसी वह सहज रूप से थीं। हम चार पोते-पोतियाँ हैं और हममें से प्रत्येक के भीतर उनका एक अंश है... उनकी छवि हम सभी में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है और हम अपना पूरा जीवन इस योग्य बनने का प्रयास करेंगे कि हम उनकी विरासत के सच्चे उत्तराधिकारी कहलाएँ।

~ शुचि

एला ताईजी हमारे परिवार की इतिहासकार थीं। वह हमारी कहानियों और रहस्यों की संरक्षक थीं। उन्होंने हमारे वंश की कई पीढ़ियों तक की कड़ियों को खोज निकाला था और यह सुनिश्चित किया था कि एक पीढ़ी को दूसरी पीढ़ी से जोड़ने वाले धागे टूटकर बिखर न जाएँ।

पीछे मुड़कर देखने पर मुझे लगता है कि एला ताईजी के जीवन के दोनों पक्ष वास्तव में कितने समान थे। एक डॉक्टर के रूप में उन्होंने दशकों तक यह सुनिश्चित किया कि प्रसव के दौरान अधिक से अधिक महिलाएँ सुरक्षित व जीवित रहें और घर में वह यह सुनिश्चित करती थीं कि उन लोगों के जीवन की कहानियाँ जीवित रहें, जिन्होंने उन्हें सबसे पहले जिया था। दोनों ही कार्यों के पीछे एक समान भावना थी - यह विश्वास कि सामान्य और साधारण जीवन भी इतना महत्वपूर्ण है कि उसे सहेजकर रखा जाए।

इतिहास तभी तक जीवित रहते हैं, जब तक कोई उन्हें सुनाता रहता है। जिन्होंने हम सबकी ओर से स्मृतियों को सँभालकर रखा, उनको हम सबसे बड़ी श्रद्धांजलि यही दे सकते हैं कि हम उन कहानियों को, उस विरासत को, कभी लुप्त न होने दें।

~ सोनाक्षी

एक पवित्र मातृस्वरूप

डॉ. आर. आई. सिंह

एला आंटी मेरे लिए माँ के समान थीं। केवल मेरे लिए ही नहीं, बल्कि अर्पणा परिवार के अनेकों सदस्यों के लिए वह मातृस्वरूप थीं।

वह एक असाधारण चिकित्सक थीं। उनके लिए डॉक्टर होना केवल एक पेशा नहीं था, बल्कि एक पवित्र सेवा-धर्म था। उनका संपूर्ण जीवन निस्वार्थ सेवा का उज्ज्वल उदाहरण रहा। रोगियों के प्रति करुणा, संवेदनशीलता और स्नेहपूर्ण व्यवहार उनके व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता थी।

आज हम जिस अर्पणा अस्पताल को देखते हैं, वह परम पूज्य माँ के आशीर्वाद, डॉ. महता के मार्गदर्शन और डॉ. एला आनंद के अथक परिश्रम का परिणाम है। एला आंटी आसपास के गाँवों में जाकर स्वास्थ्य शिक्षा, टीकाकरण तथा सुरक्षित मातृत्व के प्रति लोगों को जागरूक करती थीं। उनका सरल और सहज स्वभाव प्रत्येक ग्रामीण महिला का हृदय जीत लेता था। उनके लिए सदैव रोगियों का हित, उनके व्यक्तिगत हित से कहीं अधिक महत्वपूर्ण था।

उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि जो सुंदर विरासत वह हमें सौंप गई हैं, हम उसे आगे बढ़ाते रहें।

निस्वार्थ सेवा भाव

डॉ. मुकुल शर्मा

आज हम एक ऐसे विलक्षण जीवन का उत्सव मना रहे हैं, जो निस्वार्थ सेवा को समर्पित था। सदैव मुस्कुराती रहने वाली, करुणामयी, दयालु हृदय वाली चिकित्सक, कुशल प्रशासक, प्रेरणादायी शिक्षिका, स्नेहमयी अभिभावक, मधुर गायिका, संवेदनशील लेखिका और प्रतिभाशाली संगीतकार - डॉ. एला आनंद वास्तव में बहुआयामी व्यक्तित्व की धनी थीं।

एक प्रसिद्ध शल्य चिकित्सक की पुत्री, इंग्लैंड से चिकित्सा शिक्षा प्राप्त कर राजधानी में सफल चिकित्सा-सेवा स्थापित करने के बाद भी, उन्होंने सब कुछ त्यागकर हरियाणा के ग्रामीण और वंचित लोगों की सेवा के लिए मधुबन को अपना कर्मक्षेत्र बनाया।

पूज्य माँ तथा अन्य संस्थापक सदस्यों के आशीर्वाद से अर्पणा अस्पताल की स्थापना हुई - एक ऐसा अस्पताल, जो अपनी कार्यशैली और सेवा-भाव के कारण अपने आप में अद्वितीय था। उनके सक्षम नेतृत्व और कुशल प्रशासन में यह अस्पताल क्षेत्र के अग्रणी बहु-विशेषता अस्पतालों में विकसित हुआ।

वह एक अत्यंत दक्ष शल्य चिकित्सक थीं, जिन्होंने सबसे जटिल शल्यक्रियाओं को भी सफलतापूर्वक सम्पन्न किया। उन्होंने हजारों लोगों के

जीवन को स्पर्श किया और उन्हें केवल उपचार ही नहीं, बल्कि आशा, विश्वास और स्नेह भी प्रदान किया।

वह एक महान शिक्षिका भी थीं, जिन्होंने अनेक स्त्री-रोग विशेषज्ञों, ऑपरेशन थिएटर तकनीशियनों और नर्सों का मार्गदर्शन किया और उन्हें उत्कृष्ट चिकित्सा सेवा के लिए प्रेरित किया।

एला आंटी, आपकी कमी सदैव महसूस होगी... किंतु आपका प्रभाव मधुबन, आसपास के गाँवों और उससे भी आगे आने वाली अनेक पीढ़ियों तक गूँजता रहेगा।

जब एक उपचारक अपने वास्तविक घर लौटता है

डॉ. पाण्डा

कुछ लोगों के जाने से हमें दुःख होता है।
और फिर कुछ ऐसे भी होते हैं, जिनके जाने पर समय जैसे ठहर जाता है...
और मन में एक प्रश्न उठता है -
एक मनुष्य का जीवन इतना विशाल कैसे हो सकता है?
एक व्यक्ति इतने लोगों का आश्रय कैसे बन जाता है?
एक सरल, सौम्य आत्मा हजारों हृदयों पर अपनी अमिट छाप कैसे छोड़ जाती है?

आज हम डॉ. एला आनंद को केवल स्मरण नहीं कर रहे, हम एक ऐसे जीवन का उत्सव मना रहे हैं जिसने स्वयं को पूर्णतः दूसरों के लिए समर्पित कर दिया...
क्योंकि ऐसे जीवन बहुत दुर्लभ होते हैं।
अत्यंत दुर्लभ।

शायद एक पीढ़ी में एक बार, बल्कि अनेक पीढ़ियों में केवल एक बार, ईश्वर हमारे बीच किसी ऐसे व्यक्ति को भेजते हैं, जो अपने जीवन द्वारा यह दिखा देता है कि वास्तव में जीना किसे कहते हैं।

डॉ. एला आनंद ऐसी ही एक विभूति थीं।
उनका जन्म एक प्रतिष्ठित और समृद्ध परिवार में हुआ।
ज्ञान और विद्वत्ता के वातावरण में उनका पालन-पोषण हुआ।
उत्कृष्टता मानो उनके जीवन की स्वाभाविक धारा थी।
उनके पिता भारत के सर्वाधिक सम्मानित शल्य-चिकित्सकों में से एक थे।

उनकी माता एक प्रतिष्ठित स्त्रीरोग विशेषज्ञ थीं।
स्वयं डॉ. एला ने भारत और इंग्लैंड के श्रेष्ठ शिक्षण संस्थानों से शिक्षा प्राप्त की।

संपूर्ण संसार उनके लिए अपने द्वार खोले खड़ा था।
प्रतिष्ठा उनका स्वागत कर रही थी... सम्मान उनके चरण चूमने को तत्पर था।

किन्तु उनके हृदय की गहराइयों में एक और स्वर उन्हें पुकार रहा था... एक ऐसा स्वर जो उनसे पूछ रहा था - "यदि यह समस्त ज्ञान उन लोगों के काम न आए जिन्हें इसकी सबसे अधिक आवश्यकता है, तो फिर इस ज्ञान का अर्थ ही क्या है?"

और उन्होंने उस पुकार को सुना।
ऐसी पुकार बहुत से लोग सुनते हैं। किन्तु उसका अनुसरण बहुत कम लोग करते हैं।
डॉ. एला ने किया।

सन 1980 - जब अधिकांश लोग अपना जीवन सुरक्षित और सुविधाजनक बनाने में लगे हुये थे, तब उन्होंने और उनके प्रिय जीवनसाथी, डॉ. ए. के. आनंद, ने एक असाधारण निर्णय लिया।
उन्होंने सब कुछ छोड़ दिया।
एक सफल नर्सिंग होम छोड़ दिया... आर्थिक सुख-सुविधाएँ छोड़ दीं... सामाजिक प्रतिष्ठा छोड़ दी... वर्षों के परिश्रम से निर्मित अपना सुरक्षित जीवन छोड़ दिया।

और वे मधुबन आ गए। मधुबन पहुँचने पर उनके स्वागत में कोई समाचार शीर्षक नहीं बने... कोई कैमरे उनके पीछे-पीछे नहीं चले... किसी ने तालियों की गड़गड़ाहट से उनका अभिनंदन नहीं किया।

उनके स्वागत में थीं केवल धूल भरी पगडंडियाँ... साधारण से गाँव...
सीमित संसाधनों में जीवन जीते लोग... चुपचाप पीड़ा सहती महिलाएँ...
और वे बच्चे, जिन्होंने कभी किसी विशेषज्ञ चिकित्सक की सेवा का अनुभव ही नहीं किया था।

और हरियाणा के उस शांत कोने में एक अद्भुत परिवर्तन प्रारंभ हुआ।
वहाँ केवल एक अस्पताल का निर्माण नहीं हुआ—
वहाँ आशा का निर्माण हुआ.. विश्वास का निर्माण हुआ.. मानवीय गरिमा को पुनः स्थापित किया गया।

हजारों माताओं के लिए, जीवन के सबसे कठिन और संवेदनशील क्षणों में, डॉ. एला एक आश्वस्त करने वाला चेहरा बन गईं, जिसे देखकर उन्हें भरोसा मिलता था कि सब ठीक हो जाएगा।

असंख्य महिलाओं के लिए वे केवल एक चिकित्सक नहीं, बल्कि विश्वासपात्र सखी बन गईं।
भय और अनिश्चितता से घिरे परिवारों के लिए वे धैर्य, विश्वास और शांति का आधार बन गईं।
जन्म लेने वाले बच्चों की अनेक पीढ़ियों के जीवन की शुरुआत उनके स्नेहिल स्पर्श से हुई।

उन्होंने कितने लोगों का जीवन बचाया? कोई नहीं जानता।
कितनी माताओं ने उनके लिए मौन प्रार्थनाएँ कीं? कोई नहीं जानता।
आज इस संसार में कितने बच्चे इसलिए हैं क्योंकि जीवन और मृत्यु के बीच की उस अनिश्चित घड़ी में डॉ. एला वहाँ उपस्थित थीं? यह भी कोई नहीं जानता।

केवल ईश्वर जानते हैं। और शायद इतना जानना ही पर्याप्त है।
क्योंकि महानता आँकड़ों की मोहताज नहीं होती। महानता लोगों की स्मृतियों में जीवित रहती है।

लोग प्रायः करुणा की बातें करते हैं। डॉ. एला ने करुणा को अपने जीवन में उतारकर दिखाया।
उनके व्यक्तित्व में एक अद्भुत समन्वय था—
एक विदुषी की प्रखर प्रतिभा, एक चिकित्सक का अनुशासन, एक सेवक की विनम्रता, और एक माँ का वात्सल्यपूर्ण हृदय।

वह सहजता से एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन से निकलकर किसी छोटे-से गाँव के आँगन में पहुँच सकती थीं।
वैश्विक सम्मान प्राप्त करने के बाद भी किसी पीड़ित व्यक्ति के पास चुपचाप बैठ सकती थीं।
उन्होंने कभी किसी के बीच कोई भेद नहीं किया।
उन्होंने कभी किसी का मूल्यांकन उसके पद, परिस्थिति या पहचान से नहीं किया।
और उन्होंने कभी किसी को यह अनुभव नहीं होने दिया कि वह न्यून है।
यही उनकी सबसे बड़ी विशेषता थी।

वह केवल रोगों का उपचार नहीं करती थीं। वह लोगों के आत्मसम्मान को पुनर्जीवित करती थीं।
वह प्रत्येक व्यक्ति को यह अनुभव कराती थीं कि वह महत्त्वपूर्ण है।

विश्व ने उनके कार्य को पहचाना। सम्मान उनके पास स्वयं चलकर आए। उन्हें पुरस्कार प्राप्त हुए।
अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उनके योगदान की सराहना हुई।
संयुक्त राष्ट्र ने उस सेवा का सम्मान किया, जिसका वह प्रतिनिधित्व करती थीं।
रॉयल कॉलेज ने उनके योगदान को आदरपूर्वक स्वीकार किया।
अनेक प्रतिष्ठित संस्थानों ने उनकी उपलब्धियों का अभिनंदन किया।

किन्तु यदि कोई डॉ. एला से पूछता कि उनके लिए सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण क्या था, तो संभवतः वह पुरस्कारों की चर्चा नहीं करतीं।
शायद वह किसी ग्रामीण माँ की मुस्कान का उल्लेख करतीं... किसी नवजात शिशु का... किसी स्वस्थ होकर लौटे रोगी का... या उस परिवार का, जिसकी पीड़ा कुछ कम हो सकी।

क्योंकि सेवा उनके लिए केवल एक कार्य नहीं था। सेवा उनका स्वभाव था।

इसीलिए आज का दिन कुछ अलग-सा प्रतीत होता है।
क्योंकि जब कोई उपचारक इस संसार से विदा होता है, तो एक रिक्तता रह जाती है।
यह किसी पद की रिक्तता नहीं होती... पद तो किसी और को सौंपे जा सकते हैं।
यह किसी कौशल की रिक्तता भी नहीं होती... कौशल सिखाए जा सकते हैं।
यह उस दिव्य उपस्थिति की रिक्तता होती है, जिसे कोई दूसरा भर नहीं सकता।

कुछ लोग किसी कक्ष में प्रवेश करते हैं। और कुछ लोग अपने होने मात्र से पूरे वातावरण को आलोकित कर देते हैं... डॉ. एला ऐसे ही व्यक्तित्व थीं।

उन्होंने केवल स्थान नहीं भरे - उन्होंने लोगों के जीवन भर दिए।
इसलिए आज हम शोक भी मनाते हैं, और साथ ही कृतज्ञता से अपना मस्तक भी झुकाते हैं।

धन्यवाद, डॉ. एला।
सुविधा के स्थान पर सेवा को चुनने के लिए... यह दिखाने के लिए कि चिकित्सा केवल एक व्यवसाय नहीं, बल्कि प्रेम की अभिव्यक्ति भी हो सकती है... यह सिद्ध करने के लिए कि निस्वार्थ भाव से जिया गया एक जीवन संपूर्ण समुदायों के भाग्य को बदल सकता है।

आपने केवल एक अस्पताल का निर्माण नहीं किया -
आपने सेवा और करुणा की एक संस्कृति का निर्माण किया।
आपने केवल एक स्वास्थ्य-सेवा कार्यक्रम की स्थापना नहीं की -
आपने एक जन-आंदोलन को जन्म दिया।

आप मधुबन में एक चिकित्सक के रूप में आई थीं। आज आप यहाँ की आत्मा का अभिन्न अंग बन चुकी हैं।

संभव है कि आने वाले वर्षों में, जब नए चिकित्सक इन गलियारों से होकर गुजरेंगे...
जब नई नर्सें रोगियों की सेवा करेंगी... जब इस छत के नीचे नए शिशुओं का जन्म होगा...
तब शायद वे आपका नाम न जानते हों। किन्तु वे फिर भी आपको अनुभव करेंगे।
अर्पणा के प्रत्येक संस्कार में... उसकी करुणा में... उसकी मानवता में... उसकी सेवाभावना में...

क्योंकि कुछ लोग स्मारक बनाकर नहीं जाते। वे स्वयं नींव बन जाते हैं। इसलिए, प्रिय डॉ. एला, आपने अर्पणा को छोड़ा नहीं है... आप स्वयं अर्पणा बन गई हैं।
और जब तक इन प्रांगणों में करुणा जीवित रहेगी, इन वार्डों में सेवा की भावना प्रवाहित होती रहेगी, और मानवता के प्रति प्रेम के साथ उपचार होता रहेगा, तब तक आप हमारे साथ रहेंगी। सदैव।

ज्ञान की गंगा उसकी है,
इसको तुम अब जान लो...

'गंगा श्रद्धा प्राणप्रद'

श्रीमती कमला भंडारी

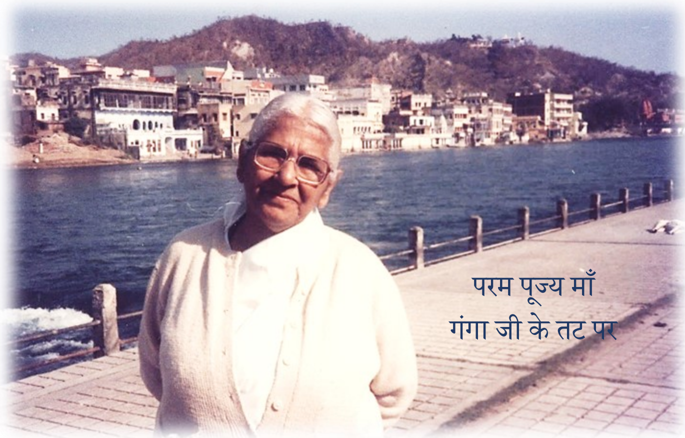

परम पूज्य माँ
गंगा जी के तट पर

गतांक से आगे...

टूरिस्ट बंगलो, हरिद्वार
13 नवम्बर, 1971

हरिद्वार में आ करके भी माँ का स्वास्थ्य उत्तरोत्तर बिगड़ता ही गया, फिर भी प्रश्नोत्तर उसी प्रकार से चलते जा रहे थे। श्रीमती भंडारी आश्चर्यचकितवत् स्तब्ध दृष्टि से देखे जा रहे थे कि शारीरिक कष्ट किसी प्रकार से भी उनके प्रवाह में बाधा नहीं डाल रहा। पूज्य माँ प्रश्नकर्ता की आंतरिक जिज्ञासा अनुसार उत्तर देते हैं। इससे स्थित प्रज्ञता का चिह्न प्रत्यक्ष रूप में दृष्टिगोचर होता है कि किसी प्रकार का गुण या दुर्गुण, उनको प्रभावित नहीं करता। यह देखकर श्रीमती भंडारी के मन में यह प्रश्न उठा:

श्रीमती कमला भण्डारी : आप मेरे स्तर पर आयें या मैं आप तक आने का प्रयत्न करूँ - इनमें क्या भेद है?

पूज्य माँ :

तेरे स्तर पर आऊँ जब, मुझे तुझे मनाना होता है।
जो तोरे रे मन भाये, वही बन जाना होता है।।1।।

गर तू आये मेरे स्तर पे, तो तू भी कहेगी राम राम।
इक पल में तुझे भूलेगा, तोरा नाम और तोरा धाम।।2।।

न मान रहे अपमान रहे, न यह रहे न वह रहे।
जो आये तेरे सामने, वैसा पल में रूप धरे।।3।।

न लग्न कोई न मान्यता, उच्च नीच कुछ नहीं रहे।
उचित अनुचित भी भूले, जब अपनी याद ही नहीं रहे।।4।।

भला बुरा यहाँ कोई नहीं, कौन है क्या नहीं याद रहे।
जस बुलाये कोई तुझे, वैसा ही तब रूप धरे।।5।।

श्रीमती कमला भण्डारी : पहले जो मैंने कहा था, वह बात ग़लत हो गई। रोशनी अँधेरे की तरफ़ जायेगी तो अँधेरा अँधेरा नहीं रहेगा, रोशनी हो जायेगी। तब आप हँस पड़े थे और कहा था, 'प्रेम तो हो ही जायेगा'। गर आप मेरी चाहनायें पूरी करते गये तो मैंने क्या सीखा? मैं तो और दुष्ट बनती जाऊँगी।

पूज्य माँ : ठीक है, ऐसे ही समझ लो! लेकिन अगर अपने पास रोशनी लाना चाहती हो तो सोचो कितनी रोशनी चाहिये? एक लैंप, दो लैंप या दस लैंप? पर केवल अपने लिये चाहिये? ज्यों अधिक रोशनी से आँखें चुँधिया जाती हैं, उसी प्रकार अतीव प्रेम मिलने से जहाँ पर केवल आप ही हों और प्रेम करने वाले का अस्तित्व ही न रहे, तो परिणाम ऐसा ही होता है।

अगर रोशनी के पास तुम चली जाती हो तो रोशनीघन बन जाती हो। तो यह नहीं कि इतनी चाहिये या उतनी चाहिये - वहाँ केवल रोशनी है। जो आया वह अपना चिराग तुमसे जला कर चला जायेगा, वरना तुम्हारी चाहनाओं के चिराग कोई और जलाता जायेगा और नित नव चाहना उत्पन्न होती रहेगी। किसी की ख़ुशी में आपको ख़ुशी मनानी ऐसे क्योंकर आ सकती है? इसलिये वहाँ सुखघनता का प्रश्न नहीं उठता। राम ने आपके लिये क्या किया और आपने राम के लिये क्या किया, इसकी ओर दृष्टि करो तो रोशनी मिल जायेगी और अपना चेहरा भी दिख जायेगा। शायद उसके पश्चात् राम भी मिल जाये।

रात्रि को गंगा के तट पर

श्रीमती कमला भण्डारी : अब तो गंगा जी के किनारे आकर बैठ ही गई हूँ। क्या गंगा मुझे स्वीकार कर लेंगी?

पूज्य माँ : स्वीकार क्यों नहीं करेंगी?

श्रीमती कमला भण्डारी : क्योंकि मेरे में कोई पावनता तो है नहीं, पात्र तो मैं हूँ नहीं।

पूज्य माँ : तुम कैसे जानती हो कि तुम पात्र नहीं? तो आये क्या करने हो ?

श्रीमती कमला भण्डारी : लोग कहते हैं गंगा पावनी है, कुछ मेरे को भी पावन कर दे, क्या हो सकूँगी?

पूज्य माँ :

गर पावनी कहो गंगे को, तो महा पावनी यह।
हृदय से उसे बुलाओ तुम, तो पावन कर दे यह।।1।।

गंगा देख अरे देख ज़रा, प्रेम प्रतीक रे है।
शिव संकल्प क्यों न कहूँ, यह गंगा दीप रे है।।2।।

ज्ञान की धारा इसे कहूँ, ज्योति कहो कह दूँ।
कौन प्रिय इसे नाम मैं दूँ, ख़ुद जननी मोरी कहूँ।।3।।

इसे बुला के देख ज़रा, इसे अंग लगा के देख ज़रा।
अपना आप रे दे करके, इस गंगे को तू देख ज़रा।।4।।

बातों में बातें रे कहे, झूठ नाम तू उसको दे।
झूठी बात मत कहना रे, जो देना है उसको तू दे।।5।।

यह तन दे दे जीते जी, अरे अपना आप तू दे दे इसे।
पावन यह कर देगी तुझे, काहे गंगे से दूर रहे।।6।।

श्रीमती कमला भण्डारी : आपने कहा है, 'गंगा को अंग लगाओ'। तो अंग लगाने से क्या अभिप्राय है?

पूज्य माँ : गंगा जो है, गर पावनी मान कर अंग लगाओगे तो अंग दे ही आओगे। गर अंग ही नहीं लगाते तो दोगे क्या? हर अंग का नाम लेई लेई कर अर्पित गंगा को करती जा। कर दे दे, नयन दे दे, जिह्वा दे दे, पाँव दे दे, कान दे दे, फिर रोम रोम दे दे। रोम रोम में रंग चढ़ाना चाहते हो, यह चाहते हो कि तुम्हारे जीवन में एक गंगा ही बहती रहे और जीवन ही गंगा बन जाये। यही चाहती हो न? गंगा को पावनी मान तो लो।

श्रीमती कमला भण्डारी : उसको पावनी मानना कैसा मानना है?

पूज्य माँ : पावनी मानना, शिव देन मानना, ज्ञान बहाव मानना, सत् रूप मानना, इसको व्यक्तिकरण करके देखो, व्यक्तित्व दोगे तो वह पूज्य माँ की तरह ही दर्शायेगी।

श्रीमती कमला भण्डारी : व्यक्तिकरण करने का भाव कैसे उत्पन्न हो? मुझे उसका जब तक निजी अनुभव न हो, तब तक कैसे व्यक्तिगत कर सकती हूँ?

पूज्य माँ :

कुछ पल को सही कुछ पल के लिये, शिव को सामने देख लो।
शिव ही शिव रे जो करे, उसको सामने देख लो॥1॥

गंगा जाई उस शिव की, ज्ञान की महिमा उसकी यह।
गंगा इसका नाम धरा, जब धरती पे वह आ उतरे॥2॥

शिव का ज्ञान जब बहे, ब्रह्म की ओर रे वह बहा।
धरती पर रे जब गिरा, गंगा जग ने नाम दिया॥3॥

ज्ञान की गंगा उसकी है, इसको तुम अब जान लो।
मौन ज्ञान यह गंगा है, इसकी बात पहचान लो॥4॥

वाक् नहीं वहाँ बात नहीं, ध्यान लगे तो दीख पड़े।
प्रेम से इसको देख लो, तो माँ का दर्शन हो जाये॥5॥

यह तो हृदय की बात है, सत् में श्रद्धा गर होये।
सत् की चाहना गर होये, गंगा राही पावन होये॥6॥

बहुत काल पहले हमारे देश में लोगों ने हमें ही उच्च स्तर पर ले जाने के लिये यह बातें कहीं। उन्होंने शिव रचा, उन्होंने गंगा रची, यह सब नाम दिये। फिर कहा गंगा हरि द्वार पर ले जाती है, फिर कहा इस गंगा में नहाओ, जो शिव के मस्तिष्क सों निकली है और फिर जीवन में जाओ तो सुख रहेगा, चैन रहेगा और वहाँ हरि तुम्हारे साथ रहेगा।

लोग इसे जीवन में तो ला न सके, तो उन्होंने अपने फूल भेजने आरंभ कर दिये। बार बार यही कहे जा रहे हैं कि जीते जी आओ, गंगा को साथ ले जाओ और शिव मस्तिष्क, जो इसका उद्गम स्थान है, वहाँ पहुँचने की कोशिश करो। लोगों ने यह समझा, यहाँ से उत्तर की ओर चलो और जहाँ से गंगा शुरू होती है वहाँ तक पहुँचो। जितना ऊपर जाते हैं, उतना बड़ा तीर्थ मानते हैं। वह तीर्थ इसलिये नहीं है कि वहाँ से जल निकलता है। वह तीर्थ इसलिये है कि शिव का मस्तिष्क वहाँ है और कहा है, शिव मस्तिष्क बहाव गंगा पहले ऊपर की ओर, यानि ब्रह्म की ओर बढ़ी और फिर धरती पे उतर पड़ी और धरती ने उसे ग्रहण किया।

हमें भी शिव संकल्प करके, शिव समान अपना रूप धर के इस धरती पर उतरना है। शिव का जीवन में रूप गंगा है। जीव जब शिव जैसा बन जाये तो जग को पावन करने वाला होता है। महा पावनी गंगा की तरह हो जायेगा। वह गंगा की तरह साधारण होगा। वह गंगा की तरह हर जल के समान एक जल की धारा होगा, उसका कोई कैसा भी इस्तेमाल कर ले। किंतु याद रहे ब्रह्म की ओर जाते हुए भी हमें धरती पर ही उतरना है।❖

क्रमशः

देने का आनंद

श्री आलोक चोपड़ा

देना एक आनंददायक अनुभव है। परन्तु हम में से कितने लोग सचमुच इसका आनंद उठा पाते हैं? यहाँ तक कि कुछ लोग तो देने को बोझ ही समझते हैं। किन्तु सभी ज्ञानी पुरुषों का कहना है कि सच्चा सुख देने में है, लेने में नहीं।

ऐसा क्यों है कि देने का सुख कुछ लोग ही अनुभव करते हैं और अन्य नहीं? इसका उत्तर प्राप्त करने के लिए हमें यह समझना होगा कि वस्तुतः देना किसे कहते हैं। किसी भी कर्म को सही या गलत, अच्छा या बुरा नहीं माना जा सकता। बाहरी क्रिया मात्र से किसी कर्म की समीक्षा नहीं की जा सकती। कर्म का वास्तविक अर्थ उसके पीछे निहित भाव और प्रयोजन से मिलता है। अतः देने के पीछे जो भाव है उसके सन्दर्भ में देने की क्रिया को समझना आवश्यक है।

हमारे कर्मों के पीछे दो मुख्य भाव होते हैं - देने का भाव और लेने का भाव। देने के कर्म के पीछे भी लेने का भाव होने के कारण अधिकतर लोग लेने वालों की श्रेणी में ही आते हैं। देने के भाव से देने वाले विरले होते हैं। ज़्यादातर हम लेने की भावना से देते हैं। इसीलिए हम देने के सच्चे सुख को अनुभव नहीं कर पाते।

सच्चा दानी वह है जो दूसरे के लाभ के लिए दे। जो दूसरे की खुशी से तादात्म्य रखता हो वही इस प्रकार का दानी होता है। उसका ध्यान अपनी ओर नहीं बल्कि दूसरे की भलाई पर ही होता है। यही सच्चा दान है। वस्तुतः ऐसा व्यक्ति ही देने से मिलने वाले परम सुख और संतोष का आनंद प्राप्त करता है।

एक महिला की शिकायत थी कि दूसरों की मदद करने से कोई लाभ नहीं। उसके अनुसार उसने आजीवन अपने परिवार की सेवा की और दूसरों को दान दिया। परन्तु किसी ने उसकी परवाह नहीं की। उसे हर चीज़ और हर व्यक्ति से शिकायत थी। उसके जीवन में कोई संतोष या खुशी नहीं थी। खोज करने पर पता चला कि उसके भाव में कितना बड़ा दोष था।

उसका सारा 'देना' निजी लाभ के लिए निवेश मात्र था। वह स्वभाव से अत्यंत आसक्त थी और अपनी उदारता से सब को अपने वश में कर लेना चाहती थी। उसके देने का भारी मूल्य यह था कि लेने वाला अपनी स्वतंत्रता खो दे। जब कोई विरोध करता तो वह उस पर कृतघ्नता का आरोप लगाती। स्वाभाविक है कि ऐसे देने से उसे कोई खुशी नहीं मिली। जब देने के पीछे लेने का अभिप्राय जुड़ा हो तो वह देने से हमें मिलने वाले लाभ को निष्फल कर देता है।

देने के भाव को उत्पन्न करने में प्रयास की आवश्यकता है। देने में निजी लाभ पर ध्यान नहीं टिका होना चाहिए। दो, क्योंकि तुम देना चाहते हो। अपना नहीं, दूसरे का लाभ मन में रखते हुए। ऐसा दान निश्चय ही अंतर को आनन्द से आलोकित कर देता है। देने में जुड़े स्वार्थ न केवल हमारे आनन्द में विघ्न डालते हैं बल्कि लेने वाले पर भी बोझ होते हैं। वे दूसरों को एहसान तले दबा देते हैं। सामाजिक दायरे में कुछ लेते समय अधिकतर उसमें निहित आशाओं का बोझ हम पर आ पड़ता है।

किसी संत से लेना सरल है क्योंकि उनका दान पवित्र और सच्चा है। वह दान के लिए ही है। प्रकृति मौन दानी है और बदले में कुछ नहीं माँगती। इसलिए प्रकृति के निकट रहना सदा शांतिप्रद होता है। बहती नदियाँ, महकते फूल, हरे-भरे खलिहान, सब हमें मोहित कर लेते हैं। प्रकृति के इस खज़ाने को लेने के लिए हज़ारों लोग उसकी शरण में जाते हैं।

नाम और कीर्ति, उपहार और सम्मान जैसे प्रयोजन हमारे देने को दूषित करते हैं। इन्हें सचेत होकर मन से निकाल देना चाहिए।

दान जितना पवित्र होगा उससे उतना ही सच्चा सुख अनुभव होगा।

एक बार स्वामी विवेकानंद किसी नगर में आये। सुबह से मिलने वालों का ताँता लगा था। उन लोगों ने उनका प्रवचन सुना। कई लोगों ने प्रश्न पूछे, सलाह माँगी। स्वामी जी के चेहरे पर उनके स्वागत के लिए मुस्कुराहट थी। उन्होंने बड़े धैर्य से सबकी बात सुनी और उनके प्रश्नों के उत्तर दिए। इसी में वह दोपहर तक व्यस्त रहे।

एक कमज़ोर दीन व्यक्ति सुबह से बैठा सब देख रहा था। सारे दर्शनार्थियों के जाने के बाद वह आगे आया। उसके कपड़ों से उसकी निर्धनता स्पष्ट थी। किन्तु उसके चेहरे पर किसी पवित्रात्मा की सी चमक थी। वह स्वामी जी के चरणों पर गिर पड़ा और फिर हाथ जोड़ कर उनके सामने खड़ा हो गया।

स्वामी जी ने मुस्कुरा कर उससे उसकी इच्छा पूछी। "स्वामी जी," उसने कहा, "आप सुबह से व्यस्त हैं। आप बोलते ही रहे हैं। सुबह से आपने न अन्न का एक भी कण खाया, न पानी की एक बूँद ही पी। आपने तनिक भी विश्राम नहीं किया। आप बहुत थक गए होंगे। काश, मैं आपको कुछ भोजन परोस सकता... परन्तु मैं एक अछूत हूँ। क्या मैं आपको एक प्याला दूध पिला सकता हूँ? या मैं कुछ आटा ले आऊँ जिससे आप रोटी बना लें..."

स्वामी जी ने उसे ध्यान से देखा। उसका हृदय कितना पवित्र और प्रेम से परिपूर्ण था। उनकी आँखों में आँसू भर आए। "यह है सच्चा प्रेम! पवित्र और निस्वार्थ!" उन्होंने मन में सोचा, "यह दिव्य है। किताबी ज्ञान से क्या लाभ? जैसा प्रेम इस व्यक्ति के हृदय में है, वही न हो तो विद्वता और आध्यात्मिक आकांक्षाओं से क्या लाभ?"

कहने की आवश्यकता नहीं कि स्वामी जी ने उससे अपने घर से खाना लाने को कहा। उस व्यक्ति ने सोचा स्वामी जी उपहास कर रहे हैं।

लेकिन स्वामी जी ने उसे अपनी सच्चाई का विश्वास दिलाया। उस आदमी के हर्ष की सीमा न रही। वह बड़े उत्साह से घर की ओर दौड़ा। वह कुछ भोजन लाया जिसे स्वामी जी ने बड़े प्रेम से खाया।

निश्चय ही इस व्यक्ति को स्वामी जी के आने का सबसे अधिक लाभ मिला। उसे स्वामी जी का सर्वाधिक सान्निध्य और उनकी सेवा का अमृतमय सुख प्राप्त हुआ। कोई क्या दे सकता है या कितना दे सकता है, यह महत्त्वपूर्ण नहीं। देने का कर्म किसी वस्तु या कर्म से पूरा नहीं होता। देने का श्रेय तभी प्राप्त होता है जब देने के कर्म में देने का शुद्ध भाव जुड़ा हो।

❖ ❖ ❖

सत् चित्त आनन्द

पिता जी- शास्त्र कहते हैं कि आत्मा सत्-चित्त-आनन्द स्वरूप है। यह क्या रूप है? साधक इसी रूप में अपना दर्शन करना चाहता है, यह कैसे हो?

सारांश - सत्य अभिलाषी ही सत् से प्रीत करता है। उसके आंतर में विवेक की ज्योति जल जाती है। प्रकाश के आते ही आंतरिक अंधकार स्वतः ही मिट जाता है। साधक का अनन्य चिंतन ही उसे सत् में प्रतिष्ठित कर देता है। विवेक की ज्योति से उसकी अज्ञानता भस्मीभूत हो जाती है। उसका मन मौन हो जाता है। अपने चिर बिछुड़े प्रियतम से मिलन हो जाता है। वास्तव में तीव्र जिज्ञासा ही उसकी सत् की ओर बढ़ने की प्रेरणा शक्ति बन जाती है।

परम पूज्य माँ :

तुम कहो शास्त्रन् राह, जीव स्वरूप की कहते हो।
ऐसा कहो सत् चित्त आनन्द, उसी को कहते हो।।1।।

यह है क्या प्रथम कहो, फिर कहो रे कैसे हो जाऊँ।
अपना स्वरूप जो आपुनो है, वही अब मैं हो जाऊँ।।2।।

तत्व ज्ञान

सत् से गर आरम्भ करो, प्रथम सत्य को जान रे लो।
प्रतिष्ठित हृदय में सत्य जो हो, हो शुद्ध चित्त रे जान लो।।3।।

आधुनिक चित्त निहित बुद्धि ही है, इतना मान लो।
शुद्ध चित्त ही चित्त कहें, आन्तर शुद्धता जान लो।।4।।

शुद्ध चित्त जिस पल होये, आनन्द हो रे जायेगा।
मन तोरा रे आपुनो, कालिमा बन नहीं पायेगा।।5।।

पूर्व भी जानो यही प्रश्न, तोरे प्रति है हो चुका।
पुनि प्रश्न रे तूने किया, क्या समझे समझ ही नहीं पड़ा।।6।।

तो यूँ समझो निज चाहना देख, देख करी पहचान रे लें।
है सत्य क्या सम्मुख धरी, तुलना करी के जान रे लें।।7।।

प्रथम सत्य में नयन टिकें, सत्य अभिलाषी हो जाये।
केवल सत्यता ही चाहे, ऐसो संग रे हो जाये।।8।।

सत् सों लग्न जिस पल हो, मन बुद्धि राह में न आये।
सत्संग की अग्न जले, मन बुद्धि वहाँ जल जाये।।9।।

यह राहें जो रे चित्त रोकें, फिर यह रोक ही न पाये।
संग जो हो ज्योति जो जले, तब ही तो ये हो पाये।।10।।

पुनि समझ मन समझ रे ले, कुछ कुछ समझ रे आ जाये।
सूक्ष्म है यह बात समझ, राह समझ तो आ जाये।।11।।

शब्द ज्ञान सों संग तजी, भाव सों संग जो हो जाये।
मैं आप वही रे हो जाऊँ, ऐसो संग गर हो जाये।।12।।

तीव्र चाह मैं वही बनूँ, वा सो मिलन हो सत्त्व का।
द्वौ मिलें गर साथ रे, जन्म हो तब विवेक का।।13।।

विवेक की ज्योति तब जले, जब यह मिलन रे हो जाये।
तीव्र लग्न का सत्त्व से, गर मिलन रे हो पाये।।14।।

जब यह मिलन रे हो जाये, तब यह ज्योति जल जाये।
लग्न यह तीव्र गर भये, दिदायमान यह हो जाये।।15।।

कोई अपने मन की चाह वृत्ति, राहों में न आ पाये।
विवेक की दृष्टि जब पड़े, भस्मीभूत वह हो जाये।।16।।

कहें साधू के दर्शन से, सब मल धुल रे जाती है।
यह साधु गर रे जन्म ले, तब ही हो अस पाती है।।17।।

पुनि समझ गर संग रे हो, सत् से संग जिस पल रे हो।
उस पल जानो विवेक ज्योत, का मिलन हाय रे हो।।18।।

विवेक जन्म वह ज्योत रे है, जो मशाल बन जलाती है।
मन बुद्धि वृत्तियन् की, चित्ता पल में बन जाती है।।19।।

विवेक वृत्ति जब जन्म ले, साधु वृत्ति कहलाती है।
उतनी उतनी भीषण वह, जितना सत् वह चाहती है।।20।।

वह वृत्ति जहाँ देख ही ले, निज मन देखे बुद्धि देखे।
जहाँ भी दृष्टि जाये पड़े, भस्मीभूत इस मन को करे।।21।।

अपनी ओर वह ख़ुद देखे, और देखे मन रे मौन भये।
बिन उस ज्योति राम मिले, हाय रे मना यह कौन कहे।।22।।

वह साधु वृत्ति जब दर्शन ले, वह साधु वृत्ति जब देख ले।
तब जानो वा दर्शन से, आपुनो मन ही मौन भये।।23।।

बाह्य दर्शन की न कहो, यह आंतर की रे बात है।
ज्योति आंतर में हो जाये, उसके यह सब हाथ है।।24।।

कहो रे बाह्य में दर्शन हो, मन मौन हो जायेगा।
समझ मना यह समझ तू ले, यह तो हो नहीं पायेगा।।25।।

विवेक की ज्योति जल जाये, वहाँ तीव्र लग्न का घृत पड़े।
प्रथम केवल लग्न है यह, सत् इसको नहीं मन कहे।।26।।

सत् सों संग हुआ ज्योत जली, पर पूर्ण नहीं रे बल सकी।
गर प्रीत तोरी बढ़ती गई, केवल सत् को चाहेगी।।27।।

जितनी जितनी सत्य में रे, प्रतिष्ठित आप ही हो जाये।
मन वचन और कर्म रे, सत्यमय तब हो जाये।।28।।

बुद्धि के निर्णय तेरे, सत्त्व रूप होने लगें।
विवेक प्रति जान मना, विवेक प्रति होने लगें।।29।।

अभी तो बुद्धि वही कहे, जो मन की चाहना होती है।
कोई मान दे जग रहे, इसकी चाहना होती है।।30।।

सत् में चित्त रे नहीं टिके, चित्त बाह्य को चाहता है।
मेरा सब कुछ बना रहे, अभी तो ये ही चाहता है।।31।।

पर गर संग रे हो गया, विवेक जन्म रे हो गया।
लग्न से पुष्ठित उसे किया, चित्त रंग बदल ही जायेगा।।32।।

विवेक का राज्य हो जायेगा, स्थूल में कछु नहीं चाहेगा।
केवल सत्य सत्य रहे, मन भी ये ही चाहेगा।।33।।

फिर भाव बहाव रे बह निकले, अपने आप की कह निकले।
सत्य आप ही हो जाये, दिदायमान हो निकले।।34।।

सत्य में गर प्रतिष्ठित हो, केवल चित्त रह जायेगा।
न बुद्धि कहलायेगा, न मन ही रह पायेगा।।35।।

न मन रहे न बुद्धि कोई, बाकी चित्त ही रह जायेगा।
चाहना मान्यता राही रे, कोई राह रोक नहीं पायेगा।।36।।

तब समझ हाय तब समझ, आनन्द ही रह जायेगा।
दुःखमय मन बुद्धि हुआ, वह रे रह नहीं पायेगा।।37।।

विवेक जो बढ़ता ही जाये, सत्त्व स्वरूप हो जायेगा।
सत्त्व आप ही हो जो गया, बाकी क्या रह जायेगा।।38।।

यह जान करी अब मान करी, केवल यहीं पे ध्यान धरो।
मैं रे यह ही हो जाऊँ, ये ही चाहना प्रधान करो।।39।।

राम से कहो बार बार, ओ रे राम अब इतना करो।
मोरी सत् के संग अब लग्न भये, यह लग्न अब तुम ही दो।।40।।

यह लग्न मिले विवेक हो, फिर ज्योतिमान हो जायेगा।
चित्त निर्मल हो जायेगा, आनन्द आप हो जायेगा।।41।।

यह समझ गर आ जाये, तब यही रे मन कहे।
राम राम...

जिसका ज्ञान आवृत हो गया हो,
उसे भगवान ने ज्ञानी क्यों कहा?

गतांक से आगे...

धूमेनाव्रियते वह्निर्यथादर्शो मलेन च।
यथोल्बेनावृतो गर्भस्तथा तेनेदमावृतम्।।
श्रीमद्भगवद्गीता - 3/38

अब भगवान काम रूप वैरी से ढके हुए ज्ञान के विषय में दृष्टान्त देकर समझाते हैं :

शब्दार्थ :

1. **जैसे धुएँ से अग्नि और मल से दर्पण ढक जाता है**
2. **और जैसे जेर से गर्भ ढका हुआ होता है,**
3. **वैसे ही उस काम और क्रोध के द्वारा यह ज्ञान ढका हुआ होता है।**

तत्व विस्तार :

अब भगवान विभिन्न दृष्टान्त देकर, कामना और क्रोध रूप ज्ञान पर आवरण के विषय में कहते हैं: जैसे कि 'धुएँ से अग्नि छिप जाती है' वैसे ही :

क) काम के धुएँ के कारण स्थूल विषय भी दिखाई नहीं देता। केवल कामना और विषय उपभोग की चाह ही रह जाती है।

ख) 'सत्' जो प्रत्यक्ष होना चाहिये था, काम के धुएँ के कारण वह भी नहीं दिखता।

ग) कामना के धुएँ से मानो प्रत्यक्ष प्रमाणित वस्तु की वास्तविकता भी नहीं दिख सकती।

घ) ज्यों धुआँ अग्नि को छुपा लेता है, त्यों कामनापूर्ण जीव अपनी कामना से आवृत हुआ विषय को ध्यान से देख ही नहीं सकता।

फिर भगवान ने कहा, ज्यों मल से दर्पण ढका हुआ होता है वैसे ही कामना पूर्ण जीव का विवेक भी ढका हुआ होता है। यानि, दर्पण पर जब मल आ जाये तो उसमें जो प्रतिबिम्ब पड़ता है, वह स्पष्टता से दिखाई नहीं देता; वैसे ही कामनापूर्ण जीव की दृष्टि धुँधली हो जाती है।

1. उसी विधि जब कामना रूपी मल, बुद्धि रूपा दर्पण को आवृत कर देता है, तो सत् को जानना कठिन हो जाता है।
2. मनो मल से आवृत बुद्धि सत्यता को नहीं जान सकती।
3. मनो मल से आवृत बुद्धि दूसरे के गुण अवगुण नहीं पहचान सकती।
4. कामना ही वह महा भयंकर मनो मल है, जो बुद्धि के विवेक को आवृत कर देती है। तब जो भी दर्शन होता है, स्पष्ट नहीं होता। काम जीव के पूर्ण व्यक्तित्व को घेर लेता है।
5. जीव जेर में घिरे हुए शिशु के समान अपने आपको भूल ही जाता है।
6. अपने कुल की लाज मर्यादा को भी भूल ही जाता है।
7. अपना मान भी उसे भूल जाता है।

इस विधि वह जीव मूर्ख बन जाता है तथा आँखों के होते हुए भी अन्धा बन जाता है।

मेरी नन्हीं लाडली!

क) कामना अपनी रुचि पूरी करने की अभिलाषा है।
ख) अपने अरमान दूसरे के लिये हितकर या अहितकर हैं, यह सोचने का वहाँ प्रश्न ही नहीं उठता।
ग) कामना अपने लिये भी हितकर है या अहितकर है, यह सोचने का भी प्रश्न ही नहीं उठता।
घ) कामना में अथाह राग द्वेष निहित हैं।
ङ) कामना उचित और अनुचित से अनभिज्ञ है।
च) कामी के मन में अपनी अहं पूर्ति के लिये नित नव नूतन विकार उठते रहते हैं।
छ) इनमें दम्भ, दर्प, प्रतिशोध की भावना बहुत होती है।
ज) जहाँ काम रहता है, वहाँ ईर्ष्या, विरोध, शत्रुता, ये भी साथ साथ रहते हैं।
झ) फिर, जब अपनी लालसा पूरी न हो और राहों में कोई आ जाये, तो ये निष्ठुर, क्रूर और दुराचारी बन जाते हैं।

नन्हीं! भगवान कहते हैं, राग और द्वेष, जिनमें कामना बसी रहती है, इनकी राहों में बाधा आने से आन्तर से ही धुआँ उठ आता है।

कामना तृष्णा जब पूर्ण न हों, तो मन में आग सी लग जाती है। तब, आन्तर में जितनी चित वृत्तियाँ हैं, वे सब मिलकर धुआँदार अग्न लगा देती हैं और अपनी ग़लती छुपा लेती हैं। इस कारण जीव की बुद्धि किंकर्तव्य विमूढ़ हो जाती है।

अतृप्त कामना वाला अपनी पात्रता अपात्रता न समझ के चलायमान हुआ, क्रोध का रूप धर लेता है। क्रोध की अग्न से जीव अन्धा हो जाता है। उस पागलपन के नशे में चूर, वह कुछ भी अनिष्ट अथवा निष्ठुर या कुटिल कर्म कर सकता है।

तब सत्य असत्य, उचित अनुचित, दया, धर्म का ज्ञान तथा विवेक, ये सब वह भूल जाता है। उसकी बुद्धि मन के अधीन और मन कामना के अधीन हुआ अनिष्ट ही करता है।

जब तक कामना की पूर्ति करते जायेंगे, रजोगुण बढ़ता जायेगा, रुचि की अधीनता बढ़ती जायेगी और वहशत भी बढ़ती जायेगी।

यदि अब भी इस कामना को वशीभूत न किया तो सर्वनाश हो जायेगा।

आवृतं ज्ञानमेतेन ज्ञानिनो नित्यवैरिणा।
कामरूपेण कौन्तेय दुष्पूरेणानलेन च।।

श्रीमद्भगवद्गीता - 3/39

आगे भगवान कहने लगे कि :

शब्दार्थ :

1. **हे अर्जुन! ज्ञानियों की नित्य वैरी**
2. **और कठिनता से तृप्त होने वाली इस काम रूप अग्नि से**
3. **यह ज्ञान ढका हुआ है।**

तत्व विस्तार :

भगवान रजोगुण तथा रजोगुण से उठने वाले काम की निन्दा करते हुए कहते हैं कि कामना की अग्नि, जो कठिनता से तृप्त होती है, उससे ज्ञानियों का ज्ञान आवृत हो जाता है।

जिसका ज्ञान आवृत हो गया हो, उसे भगवान ने ज्ञानी क्यों कहा?

नन्हीं! अर्जुन ने पूछा था कि 'यह पुरुष न चाहता हुआ भी किस के द्वारा प्रेरित हुआ बलात्कार से पाप कर बैठता है?' अर्थात् वह इतना विवश क्यों हो जाता है कि अपने आपको रोक नहीं सकता?

नन्हीं! उसके पास ज्ञान तो है, किन्तु वह आवृत हो जाता है क्योंकि :

1. अभी उसका तनत्व भाव बाकी है।
2. अभी वह अपने को कर्ता मानता है।
3. वह यज्ञमय जीवन में स्थित नहीं हुआ।
4. उसे ज्ञान तो है कि क्या उचित है और क्या अनुचित है, किन्तु उसने कर्म करने का अभ्यास नहीं किया।
5. उसने ज्ञान तो बहुत पाया है, किन्तु उसने ज्ञान की अग्नि जलाकर अपना संग अभी नहीं मिटाया।
6. निरासक्ति की बात तो वह कर सकता है किन्तु वह अभी निरासक्त हुआ नहीं।
7. बाहर से चाहे वह साधु का रूप धर ले, किन्तु मन में विषयों का उपभोग करता रहता है।
8. पूर्ण ज्ञान आ भी जाये, यदि मन में विषयों की याद रहे, तब उस मिथ्याचारी का ज्ञान भी निष्प्राण हो जाता है।

मेरी नन्हीं जान्! यदि ज्ञान को जीवन में परिणित नहीं करोगे, ज्ञान में परिपक्वता नहीं आयेगी। तब यह रजोगुण बार बार उठ आयेगा और ज्ञानियों का यह दुश्मन, ज्ञान को आवृत कर ही देगा।

यह रजोगुण, कामना और लोभ से भरा, रुचिकर को पाने की इच्छा को ही पुष्टित करता रहता है।

क्रमश

हमने कहाँ बुलाया है आपको,
आप ही ने आवाज़ देई बुला लिया...

श्रीमती पम्मी महता

हे परम वन्दनीय, परम पूज्य श्री हरि माँ - क्या कुछ नहीं माँगते आपसे, फिर भी माँगे जाती हूँ। कभी विनती करती हूँ तो कभी इल्तजा करती हूँ। कभी इबादत के लिए हाथ उठ जाते हैं, तो कभी क़दमों में शीश धर कर इस तड़प का सुकून माँग लेती हूँ ... यह तड़प सदा इस ज़ेहन पर दस्तक देती रहे और मुझे आप ही की ओर बढ़ने को निरन्तर प्रेरित करती ही चले।

लक्ष्य दिया है आपने, वहीं पर मन व नज़र टिकी रहे। भूले से भी न भूलूँ कि लक्ष्य धरा है सामने। आपने आप ही, मुझे वहाँ तक ले जाना है। हर उमंग, हर तरंग हृदय में बसी यही सुझाती रहे - मुझे मेरे रब्ब साईं चला रहे हैं, मुझे तो उन्हीं पर स्वयं को छोड़ चलते ही चले जाना होगा।

हमने कहाँ बुलाया है आपको, आप ही ने आवाज़ देई बुला लिया है। यारब, आप ही ने चलकर सभी चलन निभा दिए। सच तो यह है, अभी मंज़िल से बहुत दूर हूँ मैं। हवाओं में यही सदा है, जो मुझे रुला देती हैं। यह भी सच है, माँ - यह कनीज़ न उदास है, न ही मायूस, मगर दूरी आँसुओं में लिपट कर रुला देती है मुझे।

एक पहलू है उपासना का, जहाँ बैठ ही नहीं पाई अभी तलक, मगर उस पहलू में आपके आने को तरसती हूँ मैं। पाकर भी आपको, या ख़ुदा, कैसे दूरियाँ बनी हुई हैं - जो ज़िन्दगी को जीने के अदब

से महरूम की हुई हैं। अब दूरियाँ न रहें कहीं भी - इसी तरह इसे लिवा ले जाना, इसे अपने पहलू से गुज़ारने को, हे नाथ, आप चले आना।

पूर्ण में पूर्णतया और पूर्णरूपेण आप ही हैं।

इस परम सत्य का एहसास कराने, हे श्री हरि नाथ, आप आ जाइये। अपने ही विराट रूप में समाने को इसे लिवा ले जाना, हे श्री हरि। जब सभी आप हैं व आप ही से है, तो यह अलग-थलग क्योंकर रहेगी? आप ही की होकर, सभी की होने का परम सौभाग्य पा जाऊँगी। तभी तो हर शै, हर जीव में आप ही के दर्शन करते हुए, आपके पद-पूजन का अवसर पा जाऊँगी।

आपसे पाई हूँ आपकी दैवी सम्पदा - इसे बाँट कर ही तो धन्य-धन्य हो पाऊँगी। आपकी होने का इस नसीबन का नसीब खुल जाए, इसलिये इसे यूँ अपने से, हे नाथ, सनाथ करने चले आना। मेरा यह स्नेहासक्त हृदय व अनुराग भरा आंतर आपके श्री चरणों में यही विनीत अरदास करते हुए, बस आप ही आपसे मंगल याचना करता है...

मेरे जीवन में जो आपने आराधना शुरू की है, उसे साध्य बनाने को आप ही वचनबद्ध हैं। यह सारा श्रेय भी आपका है और यह दिव्य प्रसाद भी आप श्री हरि माँ की ही देन है। हे परम वन्दनीय, परम श्रेष्ठ, भक्तवत्सल, आप ही के आशीर्वाद मेरे जीवन में फलीभूत हों। आप ही मुझमें विस्तार पाते जाएँ, और यह 'मैं' पूर्णतया मिट जाए - आपकी चरण-धूलि में माटीवत् धुल जाए। इसका कोई नामोनिशान न रहे।

तभी तो आप माँ की आराधना सम्पूर्ण होगी और मेरा जीवन सार्थक हो पाएगा।
मेरा जन्म-जन्म धन्य-धन्य हो जाएगा।

हरि ओम् तत्सत् परब्रह्म परमेश्वर तू,

तू ही तू, तू ही तू। तू ही तू, तू ही तू। तू ही तू, इक तू ही तू।

यही परमसत्य, सत्यार्थ-प्रकाश बन जाए मेरे जीवन का। हरि ओम्

अपर ब्रह्म सों उठ कर,
परब्रह्म जब जान ले...

गतांक से आगे...

यदा पश्य: पश्यते रुक्मवर्णं कर्तारमीशं पुरुषं ब्रह्मयोनिम्।
तदा विद्वान् पुण्यपापे विधूय निरञ्जनः परमं साम्यमुपैति।।

मुण्डकोपनिषद् - 3/1/3

अर्थात् - जब यह द्रष्टा जीवात्मा सब के शासक ब्रह्मा के भी आदि कारण सम्पूर्ण जगत् के रचयिता दिव्य प्रकाशस्वरूप परम पुरुष को प्रत्यक्ष कर लेता है; उस समय पुण्य-पाप दोनों को भलीभाँति हटा कर निर्मल हुआ वह ज्ञानी महात्मा सर्वोत्तम समता को प्राप्त कर लेता है।

तत्व विस्तार:

अपर ब्रह्म सों उठ कर, परब्रह्म जब जान ले।
साधक द्रष्टा ज्ञानी भया, ज्ञान स्वरूप को जान ले।।1।।

ब्रह्मा के भी आदिकारण, परम कर्ता को जान ले।
आत्म अनुभूति हो जाये, परम सत्त्व को जान ले।।2।।

स्थूल सूक्ष्म कारण के, महा कारण को जान ले।
आत्म तत्व को आत्म में, विलीन होई कर जान ले।।3।।

महा मौन को पूर्ण ही, मौन होई कर जान ले।
मौन हुये बिन मौन को, क्योंकर कोई जान ले।।4।।

वह जीवात्म जीव भाव, तनो क्षणिकता जान गया।
तन तद्‌रूपता त्यज करी, द्रष्टा रूप वह जान गया।।5।।

भोग भाव रे छोड़ करी, योगी भाव में आ गया।
बाह्य प्रज्ञता छोड़ करी, प्रज्ञा लोक में आ गया।।6।।

सूक्ष्म तन तद्रूप जो था, कारण लोक में आ गया।
संस्कार लोक में वह, स्थूल रूप त्यजी आ गया।।7।।

मनो मौन रे हो गया, समाधिस्थ वह हो गया।
संस्कार लोक में वह, स्थूल रूप त्यजी आ गया।।8।।

हुआ भाव रहित समाधिस्थ, ईश्वर लोक में आ गया।
पृथ्वी आन्तर लोक त्यजी, वह परम लोक में आ गया।।9।।

द्रष्टा के तद्रूप हुआ, तन तद्रूपता छोड़ दी।
बाह्य जग सों पूर्ण ही, उसने अनुरूपता छोड़ दी।।10।।

हुआ मनो मौन हुआ मन परे, भाव विचार ही न रहे।
चाह अभाव नितान्त हुआ, अहम् फुंकार ही न रहे।।11।।

अहंता संगता मम गई, व्यक्तित्व कहीं पे न रहे।
स्वभाव बधित जड़वत् भये, कोई भाव कहीं पे न रहे।।12।।

तनो वस्त्र था त्यज चुका, मनो वस्त्र भी छोड़ दिया।
बुद्धि वस्त्र भी नहीं रहा, अरे अहम् वस्त्र जो छोड़ दिया।।13।।

सुख दु:ख मन के गुण गये, भोगी मन जो न रहे।
पाप पुण्य है मनो गुण, अब वह मान्यता न रहे।।14।।

इच्छा ही जब न रहे, जो मिले मिले या न मिले।
मान अपमान तो दूर रहा, अपना नाम ही न मिले।।15।।

निर्मम भया वह निर्हंकार, समत्व में वह आ जाये।
मन बुद्धि भी मौन भये, निर्मनी वह हो जाये।।16।।

न शत्रु न वैरी कोई, संग कहीं पे नहीं रहा।
अपना पराया इस जग में, कोई कहीं पे नहीं रहा।।17।।

निरपेक्ष उदासीन, निर्मना वह हो गये।
परम का क्या नाम लिया, परममय ही हो गये।।18।।

हर्ष विषाद सों हुआ परे, नित्य मुक्त वह हो गये।
परम में क्या विलीन हुये, जन्म रहित ही हो गये।।19।।

जब मन न रहा न भाव रहा, वह तो मौन ही हो गये।
अखण्ड तत्व में तुम कह लो, अखण्ड ही वह हो गये।।20।।

परम चेतन में चेतन वह, चेतन तत्व ही हो गये।
किस कोण सों अपनाऊँ, वह कोण रहित ही हो गये।।21।।

दु:ख क्लेश तो कहाँ रहे, सुख परे ही हो गये।
अनुभवी अब जो न रहे, मन परे ही हो गये।।22।।

मनो मौनी वैरागी भये, तन त्यज वह त्यागी भये।
अहम् त्यजी संन्यासी भये, वही तो परम में वासी भये।।23।।

पाप पुण्य रे कौन करे, कर्त्तव्य भाव सों हुआ परे।
गुण गुणन् में वर्त रहे, वह तो गुणन् सों हुआ परे।।24।।

स्थूल सूक्ष्म और कारण में, जिस पल रे वह उठ गये।
महा समत्व में तुम कहलो, महा पुरुष वह स्थित हुये।।25।।

निर्पेक्ष उदासीन, निरासक्त वह हो गये।
गर चाहो अरे तुम कहलो, परम भक्त वह हो गये।।26।।

सच तो इतनी बात है, मन रहित वह हो गये।
तनो लोक से पूर्ण ही, संग रहित वह हो गये।।27।।

बिन तन जग अनुभव न हो, सब रे एक ही हो जाये।
मध्य में स्वप्न यह जग भये, वृत्ति रूप ही हो जाये।।28।।

अपना आप सब जाने है, दु:ख शोक फिर कहाँ रहे।
अपना तन ही न माने, अनुभवी जहाँ पर मन रहे।।29।।

इक तन अपना नहीं रहा, सम्पूर्ण अपने भये।
या कह लो तनत्व भाव सों, वह सन्त रे उठ गये।।30।।

अध्यात्म काल स्वभाव भया, तन स्वभाव से काज करे।
जड़वत् ही पूर्ण जग में, स्वभाव बधित विराज रहे।।31।।

मनो मान्यता नहीं रही, मन ही जो रे नहीं रहा।
कर्तृत्व भाव रे कहाँ रहे, अहम् ही जो रे नहीं रहा।।32।।

समत्व में वह आ गये, कहने वाले कहते हैं।
जड़वत् तन से विचर रहे, तन से दूर ही रहते हैं।।33।।

तन बुद्धि सों हुये परे, मन से परे वह हो गये।
कर्म रचित यह तन तो रहे, मनो भाव में लय हुये।।34।।

किसको अब को' अपनाये, किससों अब वह दूर रहे।
रेखा बन्धा सब हो जाये, वह तो कुछ नहीं कभी कहे।।35।।

लब शब्द जो कहता है, राम शब्द ही बहता है।
सब कह कर वह सन्त रे, कछु नहीं कबहुँ कहता है।।36।।

भाव प्रवाह रे नहीं रहा, मन में कुछ भी नहीं रहा।
वृत्ति पुंज रे मन जो था, वृत्ति रहित ही हो गया।।37।।

तुरिया में वह खो गया, महा मौन वह हो गया।
अखण्ड रस अद्वैत में, कह लो मन रे खो गया।।38।।

परम पद वह पा लिया, राम में समा लिया।
भाव परे वह क्या हुआ, अखण्ड को रे पा लिया।।39।।

ज्ञान स्वरूप वह आप भया, ज्ञान परे वह हो गया।
ज्ञान द्वैत में होता है, अद्वैत में वह खो गया।।40।।

प्रकाश स्वरूप वह आप भया, अक्षर ब्रह्म वह हो गया।
परम तत्व वह आप हुआ, परम ब्रह्म जो हो गया।।41।।

परिशुद्ध वह शुद्ध स्वरूप, निर्मल रूप वह हो गया।
सत्त्व रूप वह प्रेम रूप, वह करुणामय ही हो गया।।42।।

पाप पुण्य अरे दूर हुये, कर्म परे जो हो गया।
कर्तृत्व भाव परे हुआ, अहम् परे जो हो गया।।43।।

अहम् मिटाव ही मिलन रे है, मनो मिटाव ही मिलन कहो।
संग मोह मम सब मिटे, मान्यता से जब परे हो वो।।44।।

17-9-61

क्रमशः

परम पूज्य माँ

अर्पणा समाचार पत्र

अर्पणा ट्रस्ट, मधुबन, करनाल, हरियाणा
अगस्त 2026

अर्पणा आश्रम

परम पूज्य माँ का जन्मोत्सव

24 से 26 अगस्त तक अर्पणा परिवार के सदस्यों एवं मित्रों ने भक्ति, कृतज्ञता और प्रार्थना की भावना से अर्पणा आश्रम में परम पूज्य माँ का जन्मोत्सव मनाया।

श्रीमद्भगवद्गीता का अध्ययन

परम पूज्य माँ की श्रीमद्भगवद्गीता के अध्याय 12 में 'भक्ति योग' के मार्ग को प्रकाशित किया गया है और साधक को प्रभु के प्रति समर्पण करने के लिए आमंत्रित किया गया है। इस व्यावहारिक एवं ज्ञानवर्धक दिव्य संदेश से प्रेरित होकर प्रतिभागियों ने अपने जीवन में सकारात्मक रूपांतरण लाने का संकल्प लिया।

माँ के उर्वशी भजनों की प्रेरणादायी प्रस्तुतियाँ

- 'अनहद नाद' समूह – जिसने 25 अगस्त को अर्पणा मन्दिर में अपने गायन, वाद्य-संगीत एवं नृत्य की प्रतिभा से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया।
- उर्वशी ललित कला अकादमी द्वारा 26 अगस्त को, श्री कृष्ण अरोड़ा के नेतृत्व में, भजनों की भावपूर्ण प्रस्तुति।

इस उत्सव ने सभी प्रतिभागियों को प्रेम, समर्पण और सेवा की भावना से प्रिय माँ के चरणों में स्वयं को 'अर्पण' करने की प्रेरणा दी।

डॉ. एला आनंद को भावपूर्ण श्रद्धांजलि *– उनकी सुमधुर यादें हम सब के दिलों में हमेशा जीवित रहेंगी*

अर्पणा आश्रम की सुदृढ़ आधार-स्तंभ, हमारी परम प्रिय डॉ. एला आनंद, 24 जून 2026 को अनंत यात्रा पर प्रस्थान कर गईं।

डॉ. एला आनंद और उनके पति, डॉ. ए. के. आनंद, वर्ष 1980 में अर्पणा आश्रम आए और प्रिय माँ के चरणों में मानवता की सेवा के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। उसी समय अर्पणा अस्पताल का शुभारंभ हुआ।

उन्होंने अर्पणा अस्पताल को अत्यंत प्रेम, समर्पण और ममता से सँवारा तथा निरंतर आगे बढ़ाया। वर्ष 2009 तक उन्होंने अर्पणा अस्पताल की चिकित्सा अधीक्षक के रूप में अपनी सेवाएँ दीं। उनकी करुणा, भक्ति और जीवनभर सेवा के प्रति समर्पण, अर्पणा परिवार का एक अमिट हिस्सा बनकर सदैव विद्यमान रहेगा और आने वाली पीढ़ियों को निरंतर प्रेरणा देता रहेगा।

अर्पणा अस्पताल

अर्पणा अस्पताल में 10-बेड वाले 24/7 डायलिसिस ब्लॉक का उद्घाटन

11 जुलाई को अर्पणा ने 10-बेड वाले अत्याधुनिक 24/7 डायलिसिस ब्लॉक का उद्घाटन किया। यह किडनी संबंधी रोगों से पीड़ित मरीज़ों के लिए विशेष स्वास्थ्य सेवाओं को सुदृढ़ करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण क़दम है। बेरी उद्योग प्राइवेट लिमिटेड के प्रतिनिधि भी इस अवसर पर उपस्थित रहे।

नई इकाई में अत्याधुनिक जर्मन Fresenius 408S डायलिसिस मशीनें लगाई गई हैं। इसमें Zero TDS जल प्रणाली भी शामिल है, जो प्रभावी और सुरक्षित डायलिसिस प्रक्रिया के लिए अत्यधिक शुद्ध जल सुनिश्चित करती है। यह सुविधा मरीजों के लिए अधिक सुलभता (24/7 उपलब्ध), सुविधा और निरंतर चिकित्सा देखभाल प्रदान करेगी। यह किडनी रोगियों और उनके परिवारों को आवश्यक सहयोग उपलब्ध कराएगी।

हम अज़ूरी कैपिटल एडवाइज़र्स एलएलपी, व्हाइट वेव्स कैपिटल एलएलपी, बेरी उद्योग प्राइवेट लिमिटेड तथा बैज नाथ भंडारी पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट के सहयोग के लिए हृदय से आभारी हैं!

हरियाणा ग्रामीण विकास

सर्वाइकल कैंसर जाँच शिविर

ग्रामीण महिलाओं में सर्वाइकल कैंसर की शीघ्र पहचान, समय पर उपचार और स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच को बढ़ावा देने के लिए अर्पणा ने जून 2026 में दो सर्वाइकल कैंसर जाँच शिविर आयोजित किए। इन शिविरों के माध्यम से सर्वाइकल कैंसर की रोकथाम और शीघ्र पहचान के प्रति जागरूकता बढ़ी तथा ग्रामीण महिलाओं के लिए समय पर स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता में सुधार हुआ।

मुख्य बिंदु:

- दोनों शिविरों में कुल 155 महिलाओं की जाँच की गई।
- 21 संदिग्ध मामलों को आगे की जाँच एवं उपचार के लिए अर्पणा अस्पताल भेजा गया।
- प्रशिक्षित सामुदायिक स्वयंसेवकों ने परामर्श एवं रेफरल सहायता प्रदान की।

स्वयं सहायता समूह की महिलाओं द्वारा जरूरतमंदों के लिए समिति का गठन

परम पूज्य माँ के सेवा और करुणा के मार्ग पर चलते हुए, अर्पणा के 103 लक्षित गाँवों की महिलाओं ने उनका जन्मदिन धूमधाम से मनाया।

- जरूरतमंद समुदाय के सदस्यों को प्रेम, देखभाल और सहयोग प्रदान करने के लिए सामाजिक सहायता एवं कल्याण समिति का शुभारंभ किया।
- उनकी स्मृति में 103 गाँवों में 1,070 नीम के पौधे लगाए, जिससे एकता, सामाजिक जिम्मेदारी और पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा मिला।

इन पहलों के लिए बैज नाथ भंडारी पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट, श्रीमती सुषमा लाल एवं श्री रविंद्र बहल के सहयोग के लिए अर्पणा हृदय से आभारी है।

नई दिल्ली – शिक्षा कार्यक्रम

मोडिकेयर फाउंडेशन द्वारा जीवन-कौशल प्रशिक्षण

विद्यार्थियों के लिए कार्यशाला: जून माह में कक्षा 6–8 के विद्यार्थियों के लिए 10 दिनों तक जीवन-कौशल प्रशिक्षण सत्र आयोजित किए गए। इनमें जीवन के मूलभूत कौशल, किशोरावस्था में होने वाले बदलाव, साथियों का दबाव एवं बुलिंग, लैंगिक विषय, नशीले पदार्थों का सेवन तथा बच्चों के यौन शोषण से सुरक्षा जैसे महत्वपूर्ण विषयों को शामिल किया गया। विद्यार्थियों ने सक्रिय रूप से भाग लेकर इन विषयों के प्रति अधिक जागरूकता विकसित की। सभी प्रतिभागियों को मोडिकेयर फाउंडेशन की ओर से प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए।

शिक्षकों के लिए 3-दिवसीय कार्यशाला: जून माह में शिक्षकों के लिए तीन दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई, जिसमें किशोरावस्था की चुनौतियाँ, शिक्षा में तकनीक का उपयोग, साइबर बुलिंग, पॉक्सो अधिनियम (POCSO Act), एंटी-रैगिंग उपाय तथा किशोरों को सहयोग देने के व्यावहारिक उपायों पर ध्यान केंद्रित किया गया। इस कार्यशाला से किशोरों के सामने आने वाली विभिन्न समस्याओं से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए शिक्षकों की जागरूकता और कौशल में वृद्धि हुई।

शैक्षिक भ्रमण

24 जुलाई को कक्षा 12 के सीबीएसई के 17 विद्यार्थियों ने अपने उत्कृष्ट बोर्ड परीक्षा परिणामों की सफलता को मनाने के लिए वृंदावन का भ्रमण किया। उन्होंने प्रेम मंदिर, इस्कॉन मंदिर, बाँके बिहारी मंदिर और चारधाम के दर्शन किए तथा प्रत्येक स्थान के आध्यात्मिक और सांस्कृतिक महत्व का अनुभव किया।

करियर काउंसलिंग सत्र

30 जून को कक्षा 11–12 के विद्यार्थियों के साथ-साथ पूर्व विद्यार्थियों ने पर्यटन, ट्रैवल और हॉस्पिटैलिटी क्षेत्र में उपलब्ध विभिन्न रोमांचक करियर अवसरों के बारे में जानकारी प्राप्त की। यह काउंसलिंग सत्र टूरिज्म एंड हॉस्पिटैलिटी स्किल काउंसिल (THSC) द्वारा आयोजित किया गया। विद्यार्थियों को बैचलर ऑफ वोकेशन (B.Voc.) पाठ्यक्रमों से भी परिचित कराया गया, जिससे उन्हें उच्च शिक्षा और भविष्य के करियर के लिए नए मार्गों की जानकारी मिली।

अर्पणा ट्रस्ट के वरिष्ठ विद्यार्थियों द्वारा स्वयंसेवा

CUET की परीक्षाएँ देने के पश्चात्, अर्पणा के कुछ वरिष्ठ विद्यार्थियों ने जून माह में, कक्षा 4 के विद्यार्थियों को रीडिंग और बोलचाल (कन्वर्सेशन) कक्षाओं में सहायता प्रदान करी।

अर्पणा, शिक्षा के क्षेत्र में केयरिंग हैंड फॉर चिल्ड्रेन (यूएसए), एस्सेल सोशल वेलफेयर फाउंडेशन (नई दिल्ली) और अवीवा पीएलसी (यूके) से प्राप्त सहयोग के लिए कृतज्ञ है।

हिमाचल कार्यक्रम

दुर्गम पहाड़ी समुदायों के लिए निःशुल्क चिकित्सा शिविर

डॉ. श्याम कुमार मांगोत्रा द्वारा बैजनाथ भंडारी पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट के सहयोग से मई, जून और जुलाई माह में निःशुल्क चिकित्सा शिविर आयोजित किए गए।

रोगियों की जाँच में रक्तचाप, ऑक्सीजन संतृप्ति, रक्त शर्करा तथा रक्त समूह की जाँच शामिल थी। इसके साथ ही विभिन्न रोगों, जैसे जोड़ों का दर्द, ऑस्टियोआर्थराइटिस, साँस लेने में तकलीफ़ और एलर्जी आदि का उपचार भी किया गया।

गाँव हट्ट (जम्मू-कश्मीर सीमा) - 31 मई को 130 मरीजों की जाँच
गाँव फरोटका, चंबा - 1 जून को 117 मरीजों की जाँच
गाँव हड़सर - 19 जुलाई को 115 मरीजों की जाँच की गई।

गुवानी गाँव तक पहुँच सुलभ हुई

वर्षों से गुवानी गाँव में गजनोई तक आने-जाने के लिए वाहन योग्य सड़क नहीं थी। इसके कारण ग्रामीणों को पैदल यात्रा करनी पड़ती थी और आवश्यक सामान खच्चरों के माध्यम से पहुँचाया जाता था।

गाँव गुवानी के अर्पणा किसान स्वयं सहायता समूह ने स्थानीय विधायक से सड़क निर्माण का अनुरोध किया। जून 2026 में सड़क का निर्माण पूरा हो गया। नई सड़क बनने से गाँव की कनेक्टिविटी में सुधार हुआ है, यात्रा का समय भी कम हुआ है तथा आवश्यक सेवाओं तक पहुँच बेहतर हुई है।

निःशुल्क चिकित्सा शिविरों तथा महिलाओं और किसानों के सशक्तीकरण के अन्य कार्यक्रमों के लिए अर्पणा, बैजनाथ भंडारी पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट, श्री रविंद्र बहल तथा ऑर्बिस फाइनेंशियल कॉरपोरेशन लिमिटेड की हृदय से आभारी है!

LET'S EMPOWER VULNERABLE WOMEN AND CHILDREN AS THEY REACH FOR THEIR DREAMS!

ARPANA TRUST

EDUCATION FOR DISADVANTAGED CHILDREN

- Tuition support for classes 1-12 pre-school Classes for toddlers, cultural activities.
- Vocational training classes.

HUMANE VALUES FOR AN EQUITABLE SOCIETY

- Dramas, Publication, Satsangs
- Charitable grants for the vulnerable
- Health/Socio economic assistance

DONATE ONLINE

ARPANA RESEARCH & CHARITIES TRUST

PROVIDES MODERN HEALTH CARE THROUGH

- Arpana Hospital for free /affordable health care.
- Arpana Medical centre, Himachal

EMPOWERING WOMEN

- Self Help Group & SHG Federations.
- Micro – Credit, Income generation, community development

EMPOWERING THE DIFFERENTLY ABLED

- Differently Abled Persons Organizations for health, assistive devices, certifications and income generation.

DONATE ONLINE

DONATIONS TO ARPANA ARE 50% TAX EXEMPT UNDER SECTION 80G, INCOME TAX ACT 1961

Cheques in favour of Arpana Trust and Arpana Research & Charities Trust to be sent to:
Information & Resources Department
Arpana, Madhuban, Karnal- 132037, Haryana

Donations through Direct Bank Remittance:
Bank of India, Karnal (IFSC Code: BKID0006750)
Arpana Research & Charities Trust; Bank Account No. 675010100100014,
Arpana Trust Bank Account No. 675010100100001

FOREIGN DONATIONS TO ARPANA ARE 100% TAX EXEMPT WHEN SENT THROUGH:

Arpana Canada
Mrs. Sue Bhanot, 7 Scarlett Drive, Brampton,
Ontario L6Y 3S9 Canada
Email: suebhanot@rogers.com

India Development & Relief Fund (IDRF)
Mr. Vinod Prakash, President, IDRF, 5821 Mossrock Drive,
North Bethesda, MD 20852 USA
E mail: vinod@idrf.org

Contact Us: Harishwar Dayal, Executive Director +91 98186 00644
Email us: arct@arpana.org | at@arpana.org

Aruna Dayal, Director Development +91 99916 87310
Websites www.arpana.org www.arpanaservices.org

Arpana Trust Arpana Charities arpana.org

अर्पणा दिवस का आनन्दमय उत्सव

हरियाणा

हर वर्ष गाँवों में परम पूज्य माँ का जन्मदिन 'एकता दिवस' के रूप में मनाया जाता है। इस अवसर पर स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं ने एक सुंदर नृत्य के माध्यम से परम पूज्य माँ के प्रति अपने प्रेम, भक्ति और कृतज्ञता की भावपूर्ण अभिव्यक्ति की।

गाँवों में सामाजिक सहायता समितियों का गठन किया गया, ताकि जरूरतमंद लोगों, विशेषकर असहाय एवं संकटग्रस्त व्यक्तियों को देखभाल और सहयोग प्रदान किया जा सके।

'एक वृक्ष माँ के नाम' अभियान के अन्तर्गत प्रत्येक स्वयं सहायता समूह ने एक नीम का वृक्ष लगाया और उसकी स्नेहपूर्वक देखभाल करने का संकल्प लिया।
कुल 1070 नीम के वृक्ष लगाये गये।

हिमाचल

हिमाचल में स्वयं सहायता समूहो की महिलाओं ने परम पूज्य माँ को गहन प्रेम और कृतज्ञत के साथ अपनी भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की।

अर्पणा दिवस समारोह के कुछ अनमोल पल

श्रीमद्भगवद्गीता के अमृत वचनों में जीवन का सार -
अध्याय 12 में वर्णित सच्चे भक्त के गुणों का पाठ एवं मनन

जहाँ हर सुर बन जाता है एक प्रार्थना –
'आशीर्वाद' में उर्वशी ललित कला अकादमी द्वारा भावपूर्ण भजन

नन्हे चरणों की थिरकन में भक्ति का भाव -
मोलरबंद, उर्वशी अकादमी तथा अर्पणा के डॉक्टरों
एवं स्टाफ़ के बच्चों द्वारा नृत्य के माध्यम से
पूज्य माँ के चरणों में प्रेम अर्पण

भक्ति के सुरों में सजी एक अनुपम संध्या -
'अनहद नाद' ग्रुप द्वारा उर्वशी की संगीतमय प्रस्तुति